HIN-527 हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन-यात्रा

एम ए हिंदी प्रथम वर्ष

नाम : चित्रा. चिन्नास्वामी. देवर

अनुक्रमांक: 23P0140004

PR.NO. 202009564

गोवा विश्वविद्यालय

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

16/20

अप्रैल 2024

परीक्षक:- 3/5/2024

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU
GOA

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
१	शैक्षणिक भ्रमण	०४
२	यात्रा की पूर्व तयारी	०५
३	अक्षरधाम मंदिर	०८
४	इंडिया गेट	१०
५	साहित्य अकादमी	१२
६	कमल मंदिर	१४
७	हुमायूं का मकबरा	१६
८	राष्ट्रपति भवन	१८
९	लक्ष्मी नारायण मंदिर	२०
१०	दिल्ली विश्वविद्यालय फैकल्टी आर्ट्स	२२
११	हिंदू विश्वविद्यालय	२४
१२	मदर टेरेसा क्रिसेंट	२६
१३	जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय	२८
१४	कुतुब मीनार	३०
१५	ताज महल	३३
१६	कृष्ण जन्म भूमि(मथुरा)	३७
१७	नन्द जी का मंदिर	३९
१८	उग्रसेन की बावली	४१

१९	राजघाट	४३
२०	राष्ट्रीय बाल भवन	४५
२१	जामा मस्जिद	४७
२२	लाल किला	४९
२३	निष्कर्ष	५१

शैक्षणिक भ्रमण

शैक्षिक भ्रमण का शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशेष महत्व है। शैक्षिक भ्रमण से हम प्रकृति की सुंदरता से रूबरू होते है। मानव की सुंदर कलाकृतियों से परिचित होते हैं, साथ ही साथ कुदरत की कुछ रहस्यों से भी परिचित होते हैं, जिसमें हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है। शैक्षिक भ्रमण में हम परोक्ष नहीं बल्कि प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं, जिससे ज्ञान स्थायी होते हैं, साथ ही रसानुभूति की प्राप्ति होती है और नयन सुख की प्राप्ति होती है। यह मानोरंजन के माध्यम से सीखना शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम है।

इस वर्ष भी, प्रत्येक वर्ष की तरह, हमारे विश्वविद्यालय ने नई दिल्ली, मथुरा, आगरा के लिए एक शैक्षिक भ्रमण का आयोजन की है। यह एक ऐतिहासिक स्थान है। यह एक मस्ती और आनंद से भरा दौरा था। हम, छात्रों को आत्मनिर्भर बनने का तरीका सीखने में मदद मिली। छात्रों ने हर स्थिति के साथ तालमेल बिठाना और अपने सामान की देखभाल करना भी सीखा ।

यात्रा की पूर्व तयारी

भ्रमण में जाने से पहले उसकी कुछ तयारी :-

उसके लिए हमने पहले भ्रमण के स्थान का चुनाव किया नई दिल्ली, आगरा और मथुरा तय किया गया था। किस दिन जाने वाले है, यह तय कर लिया गया 18 मार्च 2024 से 25 मार्च 2024 । फिर टिकट बुकिंग की प्रक्रिया शुरू कि गई, इसके लिए हमारे छात्रों में से 5 लोगों को रेल्वे स्टेशन ले जाया गया था, और सबके लिए टिकट बुक करवाया था। पहले भ्रमण का तारीख 13 फरवरी 2024 था, पर कुछ कारणों के वजह से उसे कैंसिल(cancel) किया गया । टिकट भी कैंसिल करवाया गया। उसके कुछ दिन बाद फिर से हमने टिकट की बुकिंग की और आखिर कर हमारा भ्रमण जाना तय हो ही गया।

जिस स्थान पर हम जाने वाले थे, उसकी पूरी जानकारी हमें पहले से ही प्राप्त कर लिया था| किस होटल में रहेंगे, कौन सी ट्रेन से जाने वाले है, ट्रेन का नाम, रेलवे स्टेशन पर कितनी बजे ट्रेन पहुंचेगी, इन सब की जानकारी हमने पहले से ही जुटा ली थी।हम सब 2 बजे रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए थे | हमारी ट्रेन का समय पहले 3:40 को था, पर ट्रेन प्लेटफॉर्म पर देरी हो गई थी और 4:56 बजे आया था। हमने पैकिंग बहुत कम और बहुत जरूरी चीजों का ही किया था, महत्वपूर्ण दस्तावेज , दवाइयां, और सफर के समय खाने पीने की चीजों को भी साथ ले गए |

यात्रा की शुरुआत: -

हमारे जाने वाले ट्रेन का नाम गोवा एक्सप्रेस था, हमारी सीटें सभी एसी इकॉनमी में बुकिंग की गई थी | शुरुआत में ही हमने एक फोटो भी ले ली थी। हम 26 छत्र और २ शिक्षक गए | हमने यात्रा के समय बहुत सारी मस्ती की, हमारी ट्रेन जाते समय महाराष्ट्र,मध्य प्रदेश, उत्तरप्रदेश से होते हुए दिल्ली जा रही थी। रेलगाड़ी में बैठे-बैठे हमने बहुत सारे ऐसे नजरें और दृश्य भी देखे, पहाड़ों पर एक पत्थरो, सुखे हुए झरनों को, खेतों को देख कर बहुत बुरा भी लग रहा था |

जाते समय हमे डेढ़ दिन का समय लग गया था | 20 मार्च 2024 को सुबह 5:58 बजे तक पहुंच गये थे, निजामुद्दीन जंक्शन दिल्ली, वहा से हमें होटल जाने के लिए मेट्रो से अपने आगे का सफर तय करनी थी | रेलवे स्टेशन से हमें 10-15 मिनट चल कर मेट्रो स्टेशन पहुंचें | वहा सबके लिए टिकट निकाले और 2 स्टेशन क्रॉस कर हम पहुंचे आखरी स्टेशन पर वहां सबसे बड़ी गड़बड़ हो गई थी | कुछ कारणों के वजह से हमे मेट्रो मे ही 2 घंटे से अधिक समय बहार बैठना पड़ा था | हम दिल्ली पहुंचने के बाद ही होटल ढूंढने के लिए सर गए इस कारण हमें बहुत समय मेट्रो के बाहर उनका इंतजार कर रहे थे। उनके आने के कुछ समय पहले ही उन्हें ने हम लोगो को बहार आने को कहा हम मेट्रो से बाहर निकलते ही दिल्ली की एक बात से रूबरू होना पड़ा था, लोगों का व्यव्हार कैसा होता है |

दिल्ली के भीड़भाड़ और व्यवसायिकता से पटे - बड़े महानगर को बहुत करीब से देखा और डरे भी कितना अजीब है न अपने देश का महानगर भी हमको डराता हैं दिल्ली के मुख्य स्टेशन पर जब हम उतरे बड़ी बेचैनी से लोगों को अपने अपने मंजिल की ओर भागते हुए पाया |

दिल्ली के उस चमकीले शहर से उलट वह इलाका बहुत ही अलग था | दिल्ली के धूल भरे और अजनबीयत भरे माहौल से थके हम बहुत जल्द से जल्द होटल पहुंचने का गड़बड़ हमें था | जैसे तैसे हम रिक्शा में गलियों के अंदर पहुंच कर जब और गली के अंदर रिक्शा वाले भैया ने हमें हमारे होटल तक पहुंचा दिया | हमारे होटल का नाम इंडिया इंटरनेशनल डीएक्स (India international dx) था |

यात्राओं के स्थान और उनकी जानकारी -

अक्षरधाम मंदिर

अक्षरधाम भारत में सबसे लोकप्रिय हिंदू मंदिरों में से एक है | स्वामीनारायण अक्षरधाम को ही अक्षरधाम मंदिर के नाम से जाना जाता है | यह मंदिर 141 फीट ऊंचा, 316 फीट चौड़ा और 356 फीट लंबा खूबसूरती से बना है | मंदिर की आकर्षक वास्तुकला में नौ गुंबदों और 234 नक्काशीदार स्तंभों के साथ आचार्यों, स्वामियों और भक्तों की 20,000 से अधिक मूर्तियां हैं | यही वजह है कि इसको गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दुनिया के सबसे बड़े हिंदू मंदिर परिसर के रूप में दर्ज किया गया है | यहां साल के 12 महीने पर्यटकों की भीड़ लगी रहती हैं |अक्षरधाम मंदिर 06 नवंबर 2005 को खोला गया था. यह मंदिर एचएच योगीजी महाराज की स्मृति में श्री अक्षर पुरुषोतम स्वामीनारायण संस्था द्वारा बनाया गया था | इस मंदिर में आप सुबह 10:00 बजे से शाम 06:30 बजे तक कभी भी मंदिर जा सकते हैं | यह मंगलवार से रविवार तक खुला रहता है, जबकि सोमवार को बंद रहता है | अक्षरधाम मंदिर के सभी स्वागत द्वारों पर सभी के लिए प्रवेश निःशुल्क है|

हम मेट्रो से पहुंचे अक्षरधाम मंदिर

अक्षरधाम मंदिर के लिए मेट्रो सेवा बेहद आसान है. यहां स्थित अक्षरधाम मेट्रो स्टेशन मंदिर से करीब 350 मीटर की दूरी पर है | मेट्रो टोकन या पास एक बार का ही मान्य रहेगा |

दश द्वार :-यह द्वार दसों दिशाओं के प्रतीक हैं, जो कि वैदिक शुभकामनाओं को प्रतिबिंबित करते हैं।

भक्ति द्वार :- यह द्वार परंपरागत भारतीय शैली का है। भक्ति एवं उपासना के २०८ स्वरूप भक्ति द्वार में मंडित हैं।

मयूर द्वार :- भारत का राष्ट्रीय पक्षी मयूर, अपने सौन्दर्य, संयम और शुचिता के प्रतीक रूप में भगवान को सदा ही प्रिय रहा है। यहां के स्वागत द्वार में परस्पर गुंथे हुए भव्य मयूर तोरण एवं कलामंडित स्तंभों के ८६९ मोर नृत्य कर रहे हैं। यह शिल्पकला की अत्योत्तम कृति है। अक्षरधाम मन्दिर को गुलाबी, सफेद संगमरमर और बलुआ पत्थरों के मिश्रण से बनाया गया है। इस मंदिर को बनाने में स्टील, लोहे और कंक्रीट का इस्तेमाल नहीं किया गया। मंदिर को बनाने में लगभग पांच साल का समय लगा था। श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था के प्रमुख स्वामी महाराज के नेतृत्व में इस मंदिर को बनाया गया था। करीब 100 एकड़ भूमि में फैले इस मंदिर को 11 हजार से ज्यादा कारीगरों की मदद से बनाया गया। पूरे मंदिर को पांच प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है। मंदिर में उच्च संरचना में 234 नक्काशीदार खंभे, 9 अलंकृत गुंबदों, 20 शिखर होने के साथ 20,000 मूर्तियां भी शामिल हैं। मंदिर में ऋषियों और संतों की प्रतिमाओं को भी स्थापित किया गया है।

प्रवेश :- मंदिर में प्रवेश फ्री है लेकिन अंदर जाने के अलग-अलग चार्ज हैं। मंदिर में अंदर जाने के लिए कुछ विशेष नियम भी बने हैं। प्रवेश करने के लिए ड्रेस कोड भी बना है। आपके कपड़े कंधे और घुटने तक ढके होने चाहिए। क्योंकि वस्त्र भी संस्कार व संस्कृति के

परिचायक होते हैं। अगर आपने ऐसे वस्त्र नहीं पहने हैं तो आप यहा 100 रुपये शुल्क देकर वस्त्र किराए पर भी ले सकते हैं।

वहा से निकाल कर हमने फिर मेट्रो से सफ़र करके अपने होटल के कमरे में आ गए, सर ने हमें अगले दिन की शेड्यूल भी बता दिया, अगले दिन हमें सुबह 8 बजे का समय दिया गया था। उसके बाद खाना खा कर हम सभी अपने अपने कमरों में सो गए थे |

अगले दिन 21 मार्च 2024 :- मेट्रो से हम बहुत समय हो रहा था इसलिए हमें गुमने के लिए बस का इंतजाम किया गया था। इंडिया गेट देखते हुए हमने ने अगले दिन का सफर शुरू किया पहले हम इंडिया गेट देखने चले गए इंडिया गेट हमारे होटल से बहुत पास में ही थी।

इंडिया गेट

दिल्ली में राजपथ मार्ग पर मौजूद इंडिया गेट भी देश के इतिहास को दर्शाता है। इसे पहले अखिल भारतीय युद्ध स्मारक के नाम से भी जाना जाता था। इस युद्ध स्मारक पर शहीद भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि दी जाती है। हर साल गणतंत्र दिवस के अवसर पर यहां परेड निकाली जाती है, इस दौरान भारत की तीनो सेनाओं के कमांडर अपने नवीनतम रक्षा प्रोद्योगिकी की परेड निकलते है और साथ ही देश के सभी राज्यों के सांस्कृतिक कार्यकर्मो की विभिन्न प्रकार की झांकियां भी प्रस्तुत की जाती है।इंडिया गेट का निर्माण ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रथम विश्व युद्ध 1914-1918 और 1919 में तीसरे एंग्लो-अफ़ग़ान युद्ध में शहीद हुए 80,000 से अधिक भारतीय सैनिक को श्रद्धांजलि देने के लिए बनाया गया था।

इसकी आधारशिला 10 फरवरी, 1921 को ड्यूक ऑफ कनॉट द्वारा रखी गई थी। यह प्रोजेक्ट 10 साल में पूरा हुआ और 12 फरवरी, 1931 को वाइसरॉय, लॉर्ड इरविन ने इंडिया गेट का उद्घाटन किया।

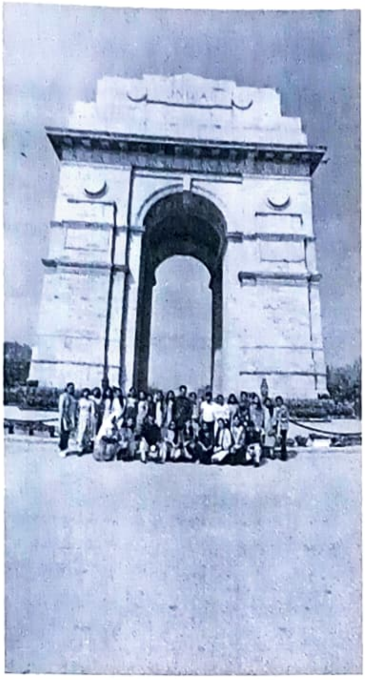

इंडिया गेट को एडविन लुटियन ने डिजाइन किया था | जो तब दिल्ली के मुख्य वास्तुकार थे। उन्हें उस समय युद्ध स्मारक का एक प्रमुख डिजाइनर भी माना जाता था। साल 1931 में इसका निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ।

इंडिया गेट का निर्माण करने में मुख्य रूप से लाल और पीले पत्थरों का उपयोग किया गया है, जिन्हें खासतौर पर भरतपुर से लाया गया था।भारत का राष्ट्रीय स्मारक होने के नाते,इंडिया गेट भी विश्व के सबसे बड़े युद्ध स्मारकों में से एक है। इसकी ऊंचाई 137,79 फुट है। इस स्मारक की संरचना पेरिस के आर्क डे ट्रॉयम्फ़ से प्रेरित है।

इंडिया गेट एक षट्कोणीय जगह के बीचों बीच स्थित है, जिसका व्यास 625 मीटर है और क्षेत्रफल 360,000 वर्ग मीटर और चौड़ाई 9.1 मीटर है। इसके कोने के मेहराबों पर ब्रितानिया-सूर्य अंकित है। जबकि महराब के दोनों ओर इंडिया छपा हुआ है। जब इंडिया गेट बनकर तैयार हुआ था, तब इसके सामने जार्ज पंचम की एक मूर्ति लगी हुई थी, जिसे बाद में अंग्रेजी राज की अन्य मूर्तियों के साथ कोरोनेशन पार्क में स्थापित कर दिया गया।

इस स्मारक में साल 1919 में हुए अफगान युद्ध के दौरान पश्चिमोत्तर सीमांत में शहीद हुए 13,516 से अधिक ब्रिटिश और भारतीय सैनिकों के नाम छपे हुए है।

इस स्मारक को 10 साल बाद तत्कालीन वायसराय लार्ड इर्विन ने राष्ट्र को समर्पित किया था। इंडिया गेट के छतरी के नीचे साल 1971 में हुए भारत-पाकिस्तान युद्ध में वीरगति को प्राप्त होने वाले शहीद भारतीय सैनिकों के सम्मान में अमर जवान ज्योति की स्थापना की गई थी। यह अमर ज्योति दिन-रात जलती रहती है। अमर जवान ज्योति का उद्घाटन भारतवर्ष की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 1972 में 26 जनवरी के दिन किया था। अमर जवान ज्योति का निर्माण काले संगमरमर से किया गया है, इसके ऊपर एक बंदूक

और एक सैनिक की टोपी रखी हुई है। भारत के प्रधानमंत्री और भारतीय सशस्त्र बलों के प्रमुख 26 जनवरी, विजय दिवस और इन्फैन्ट्री डे पर अमर जवान ज्योति में श्रद्धांजलि देते हैं। इंडिया गेट के चारों ओर आसपास में बगीचे और खूबसूरत हरे-भरे पौधों का निर्माण किया हुआ है, जिसे दिल्ली में एक पिकनिक स्पॉट के रूप में भी जाना जाता है।

साहित्य अकादमी

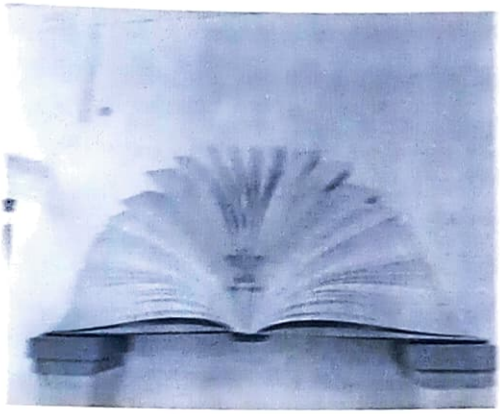

भारत की स्वतंत्रता के भी काफी पहले से देश की ब्रिटिश सरकार के पास भारत में साहित्य की राष्ट्रीय संस्था की स्थापना का प्रस्ताव विचाराधीन था। 1944 में, भारत सरकार ने रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल का यह प्रस्ताव सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर लिया था कि सभी क्षेत्रों में सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय सांस्कृतिक ट्रस्ट का गठन किया जाना चाहिए। ट्रस्ट के अंतर्गत साहित्य अकादेमी सहित तीन अकादेमियाँ थीं। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत की स्वतंत्र सरकार द्वारा प्रस्ताव का अनुसरण करते हुए विस्तृत रूपरेखा तैयार करने के लिए शृंखलाबद्ध बैठकें बुलाई गईं। सर्वसम्मति से तीन राष्ट्रीय अकादेमियों के गठन का निर्णय हुआ, एक साहित्य के लिए, दूसरी दृश्यकला तथा तीसरी नृत्य, नाटक एवं संगीत के लिए। लेकिन विचारों में यह मतभेद हुआ कि सरकार को अपनी ओर से कदम उठाते हुए अकादेमियों की स्थापना करनी चाहिए अथवा इसे उन व्यक्तियों के लिए छोड़ना चाहिए, जो अकादेमियों की स्थापना के लिए आवश्यक नैतिक प्राधिकारी हैं। संघ के शिक्षामंत्री अबुल कलाम आजाद का विचार था कि 'यदि हमने अकादेमी के लिए नीचे से इसके विकास की प्रतीक्षा की तो शायद यह कभी स्थापित नहीं हो पाएगी।' सरकार ने अकादेमियों का गठन किया, लेकिन जब एक बार वे गठित हो गईं, तब वह किसी नियंत्रण में नहीं रहीं और उन्हें स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करने के लिए छोड़ दिया गया। भारत सरकार ने दिनांक दिसंबर 1952 के माध्यम से साहित्य अकादेमी नामक राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था की स्थापना का निर्णय किया। साहित्य अकादेमी का विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है : भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करनेवाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में

साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालाँकि अकादेमी की स्थापना सरकार दवारा की गई है, फिर भी यह एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है।

भारत की 'नेशनल एकेडेमी ऑफ लेटर्स' साहित्य अकादेमी साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और उसका देशभर में प्रसार करने वाली केन्द्रीय संस्था है तथा सिर्फ यही ऐसी संस्था है, जोकि भारत की चौबीस भाषाओं, जिसमें अंग्रेजी भी सम्मिलित है, में साहित्यिक क्रिया-कलापों का पोषण करती है। अदयतन अपने गतिशील अस्तित्व दवारा इसने अपने निरंतर प्रयासों से सुरुचिपूर्ण साहित्य तथा पढ़ने की स्वस्थ आदतों को प्रोत्साहित किया है; इसने संगोष्ठियों, व्याख्यानों, परिसंवादों, परिचर्चाओं, वाचन एवं प्रस्तुतियों दवारा विभिन्न भाषिक और साहित्यिक क्षेत्रों में अंतरंग संवाद को जीवंत बनाए रखा है; कार्यशालाओं तथा वैयक्तिक अनुबंधों दवारा पारस्परिक अनुवादों की गति को तीव्र किया है; पत्रिकाओं, विनिबंधों, हर विधा के वैयक्तिक सृजनात्मक रचना संचयनों, विश्वकोशों, शब्दकोशों, ग्रंथ-सूचियों, भारतीय लेखक परिचय-कोश और साहित्येतिहास के प्रकाशन दवारा एक गंभीर साहित्यिक संस्कृति का विकास किया है। अकादेमी ने अब तक 6000 से ज़्यादा पुस्तकें प्रकाशित की हैं, अकादेमी हर 19 घंटे में एक पुस्तक का प्रकाशन कर रही है। प्रत्येक वर्ष अकादेमी क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की कम से कम 50 संगोष्ठियों का आयोजन करती है। इसके अलावा आयोजित होनेवाली कार्यशालाओं और साहित्यिक सभाओं की संख्या प्रतिवर्ष लगभग 300 है। ये कार्यक्रम लेखक से भेंट, संवाद, कविसंधि, कथासंधि, लोक : विविध स्वर, व्यक्ति और कृति, मेरे झरोखे से, मुलाकात, अस्मिता, अंतराल, आविष्कार, नारी चेतना, युवा साहिती, बाल साहिती, पूर्वोत्तरी और साहित्य मंच जैसी शृंखलाओं के अंतर्गत आयोजित किए जाते हैं।

अकादेमी प्रत्येक वर्ष अपने दवारा मान्यता प्रदत्त चौबीस भाषाओं में साहित्यिक कृतियों के लिए पुरस्कार प्रदान करती है, साथ ही इन्हीं भाषाओं में परस्पर साहित्यिक अनुवाद के लिए भी पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। ये पुरस्कार साल भर चली संवीक्षा, परिचर्चा और चयन के बाद घोषित किए जाते हैं। अकादेमी उन भाषाओं के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान करने वालों को 'भाषा सम्मान' से विभूषित करती है, जिन्हें औपचारिक रूप से साहित्य अकादेमी की मान्यता प्राप्त नहीं है। यह सम्मान 'क्लासिकल एवं मध्यकालीन साहित्य' में किए गए योगदान के लिए भी दिया जाता है। अकादेमी प्रतिष्ठित लेखकों को महत्तर सदस्य और मानद महत्तर सदस्य चुनकर सम्मानित करती है। आनंद कुमारस्वामी और प्रेमचंद के नाम से एक 'फ़ेलोशिप' की स्थापना भी की गई है। अकादेमी ने बेंगलूरु, अहमदाबाद, कोलकाता और दिल्ली में अनुवाद-केन्द्र और दिल्ली में भारतीय साहित्य अभिलेखागार का प्रवर्तन किया है। नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी कैम्पस, शिलॉग में जनजातीय और वाचिक साहित्य परियोजना के प्रवर्तन के लिए एक परियोजना कार्यालय स्थापित किया गया था। वर्तमान में यह कार्यालय अगरतला में स्थानांतरित कर दिया गया है तथा और भी कई कल्पनाशील

परियोजनाएँ बनाई जा रही हैं। साहित्य अकादेमी को सांस्कृतिक और भाषाई विभिन्नताओं का ज्ञान है और वह स्तरों एवं प्रवृत्तियों को ध्वस्त कर कृत्रिम मानकीकरण में विश्वास नहीं करती; साथ ही वह गहन अंतःसांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्रयोगात्मक सूत्रों के बारे में जागरूक है, जो भारत के साहित्य की विविध अभिव्यक्तियों को एकसूत्रता प्रदान करते हैं। विश्व के विभिन्न देशों के साथ यह एकता अकादेमी के सांस्कृतिक विनिमय के कार्यक्रमों द्वारा वैश्विक स्तर पर एक अंतरराष्ट्रीय प्रजातिगत आयाम की खोज करती है।

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। उसके बाद बहुत से लोग बने और अब 2018 को संपन्न पुनर्गठित सामान्य परिषद् द्वारा प्रो. चंद्रशेखर कंबार को 2018-2022 के लिए अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया।

वहा पर हमने भी कुछ किताबें देखी जैसे :-

बालवसुधा, इप्टा वार्ता, नटरंग, गगनांचल

आदिवासी संस्कृति संगीत एवं नृत्य रंग प्रसंग,

स्वर सरिता, राजभाषा रूपाम्बरा, संस्कृति, रंगायन,कलावसुधा संगीत काला बिहार

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलतः अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी की सामान्य परिषद में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है। अब तक हुए परिवर्तनों के साथ संविधान परिशिष्ट-। में दिया गया है ।

मान्य भाषाएँ : भारत के संविधान में परिगणित बाईस भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए जो परामर्श मंडल गठित किए गए साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवीन्द्र भवन, 35 फीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली 110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ- संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं। यह कार्यालय डोगरी, अंग्रेज़ी, हिन्दी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है और इन भाषाओं के संदर्भ में क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में कार्य करता है।

पुस्तकालय :

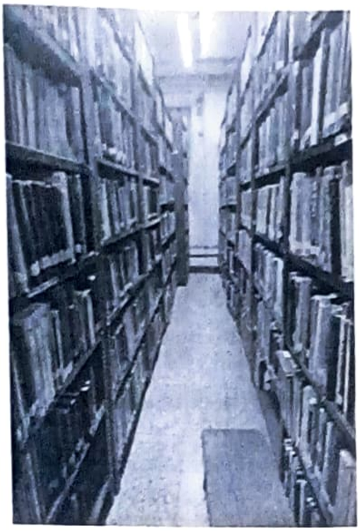

साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ पर अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त चौबीस भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। यह पुस्तकालय सर्जनात्मक कृतियों, समालोचनात्मक पुस्तकों, अनूदित कृतियों, संदर्भ ग्रंथों तथा शब्दकोशों के समृद्ध संग्रह के लिए जाना जाता है। नई दिल्ली स्थित 'वाचिक और जनजातीय साहित्य' के नव-उद्घाटित केंद्र की परिकल्पना में हमारी विरासत को व्यवस्थित और वैज्ञानिक तरीके से संरक्षित करना है, ताकि भारतीय जनता अपने प्राचीन समाज को वैश्विक दृष्टिकोण से समझे और पारंपरिक ज्ञान से परिचित हो सके। अकादेमी का विचार इन भाषाओं में उपलब्ध मूल वाचिक पाठ को ऑडियो और ऑडियो-वीडियो में अभिलेखित करने का है तथा व्यापक वितरण के लिए अंग्रेज़ी अनुसूचित भाषाओं और अंग्रेज़ी में उनके अनुवाद के लिखित रूप में तैयार करना का है। व्यापक वितरण के लिए अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ लिखित रूप में तैयार करने का है।

संगीत नाटक अकादमी, भारत के प्रथम राष्ट्रपति - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद - के दिमाग की उपज थी। संगीत, नृत्य एवं नाटक के क्षेत्र में भारत की प्रथम राष्ट्रीय अकादमी उसी समय से, नृत्यकला, गायन और नाटकों के प्रचार के माध्यम से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के विकास कार्य में लगी है। यह अकादमी अन्य राज्यों के कला संस्थानों, कला अकादमियों और सांस्कृतिक संस्थानों के समन्वय से कार्य करती है। इस अकादमी द्वारा आयोजित सांस्कृतिक गतिविधियों में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पर्व, युवा उत्सव और नियमित आयोजित होने वाली संगोष्ठियां और कार्यशालाएं शामिल हैं।

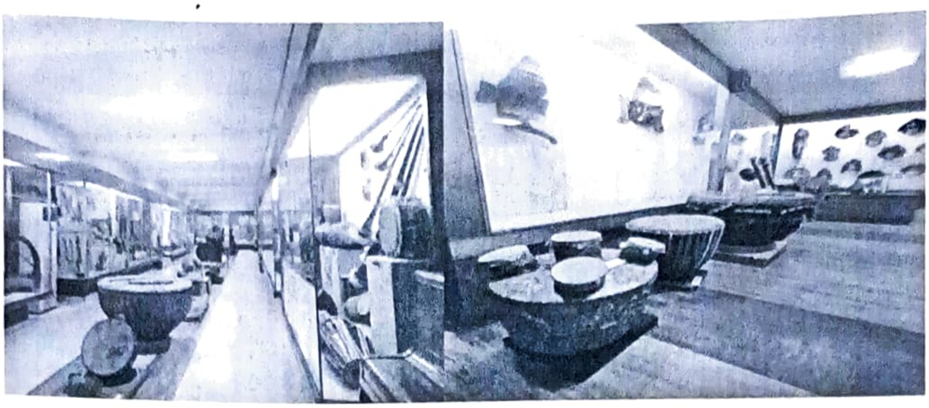

संगीत नाटक अकादमी नौ भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों को पुरस्कार प्रदान करती है:

भरतनाट्यम: तमिलनाडु में उत्पन्न हुआ

कथक : उत्तरी भारत में उत्पन्न,कथकली : केरल में उत्पन्न,

कुचिपुड़ी : आंध्र प्रदेश में उत्पन्न,मणिपुरी : मणिपुर में उत्पन्न,मोहिनीअट्टम : केरल में उत्पन्न,ओडिसी : ओडिशा में उत्पन्न,सत्त्रिया : असम में उत्पन्न,छाऊ : झारखंड , ओडिशा और पश्चिम बंगाल में उत्पन्न होता है |

अकादमी के पास भपंग वादन , नई दिल्ली में संगीत वाद्ययंत्रों का एक संग्रहालय-सह-गैलरी है। यहां 200 से अधिक संगीत वाद्ययंत्र प्रदर्शित हैं।

कमल मंदिर (Lotus temple)

दिल्ली ही नहीं देश-दुनिया में भी लोटस टेंपल मशहूर है। तीन दशक पहले 24 दिसंबर, 1986 को इसका उद्घाटन हुआ था, जबकि इसमें आम जनता के लिए एक सप्ताह बाद यानी 1 जनवरी, 1987 को खोला गया था। इसी वास्तु कला यहां पर आने वाले लोगों को लुभाती है। बहाई लोटस मंदिर को ईरानी वास्तुकार फरीबोर्ज़ सहबा ने कमल के आकार में डिजाइन किया था। गंगा जमुनी तहजीब की तर्ज पर यह मंदिर हिंदू और बौद्ध धर्म सहित सभी धर्मों के लिए बनाया गया है। कहने के लिए यह मंदिर है, लेकिन लोगों को इसका वास्तु लुभाता है। इसकी कई खूबियों में से एक यह है कि मंदिर में पर्यटकों के लिए धार्मिक पुस्तकों को पढ़ाने के लिए लाइब्रेरी और आडियो-विज़ुअल रूम भी बने हुए हैं। मंदिर का उसके काम के लिए कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं, जिसमें ग्लोबआर्ट अकादमी, इंस्टीट्यूशन ऑफ स्ट्रक्चरल इंजीनियर्स और बहुत कुछ शामिल हैं।

बहाई समुदाय के मुताबिक, ईश्वर एक है और उसके रूप अनेक हो सकते हैं। मूर्ति पूजा को नही मानते हैं । फिर इसके अंदर अनुष्ठान करने की अनुमति नहीं है। वहीं, किसी भी धर्म के लोग या जाति के लोग कमल मंदिर में आ सकते हैं। इसके साथ ही मंदिर के अंदर किसी भी वाद्य यंत्र को बजाने पर सख्त पाबंदी है। मंदिर में आपको बिल्कुल भी बोलने की अनुमति नहीं होती, यहा हमेशा शांति बनाए रखने की सलाह दी जाती है।

24 दिसंबर, 1986 को मंदिर का उद्घाटन हुई। आम जनता के लिए यह मंदिर 1 जनवरी 1987 को खोला गया। कमल की आकृति होने के कारण इसे कमल मंदिर या लोटस टेंपल के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर की सबसे बढ़ी खूबी यही है कि यहां पर सभी धर्मो के लोग अपनी पूजा बिना शोर किए कर सकते हैं। मंदिर परिसर इतना बड़ा है कि इसमें एक साथ 2000 से अधिक एकसाथ बैठ सकते हैं इस मंदिर में चार कुंड हैं, जिनमें जल हमेशा बहता रहता है। मंदिर 20 फीट की ऊंचाई पर है, जिस तक पहुंचने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं मंदिर में किसी देवता या मूर्ति की कोई मूर्ति या छवि नहीं है इसके बावजूद इसके मंदिर के नाम से ही जाना जाता है।

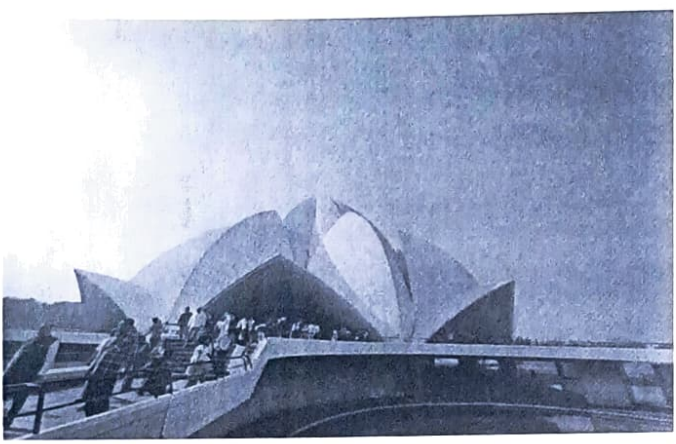

दरअसल, बहाई धर्मग्रंथों के मुताबिक, बहाई लोटस टेंपल के भीतर मूर्तियों की कोई छवि या मूर्ति नहीं हो सकती है। बहाई मंदिरों में व्यापक गोलाकार गुंबद मौजूद हैं और दिल्ली में लोटस टेम्पल दुनिया के खूबसूरत पूजा स्थलों में से एक है।

लोटस टेंपल पूरी तरह से 1863 में बनकर तैयार हुआ था। इस मंदिर में 27 संगमरमर की पंखुड़ियां हैं, जिनसे मंदिर के अंदर जाने के लिए 9 साइड हैं। यहां पर प्रार्थना करने की अनुमति है, इसलिए केंद्रीय कक्ष में 2500 लोगों के बैठने की क्षमता है। वहीं, हाल का केंद्र 40 फीट लंबा है, जिसकी आंतरिक साज सजावट बेहद खूबसूरती से की गई है। कमल मंदिर को तालाबों और पार्क से सजाया गया है। मंदिर के निर्माण में तकरीबन 10,000 विभिन्न आकार के मार्बल का इस्तेमाल हुआ है। जिसकी लागत 10 मिलियन थी। अपनी फूलों जैसी

आकृति के लिए उल्लेखनीय, यह शहर में एक प्रमुख आकर्षण बन गया है। धर्म के सभी बहाई घरों की तरह, लोटस टेम्पल सभी के लिए खुला है, धर्म या किसी अन्य योग्यता की परवाह किए बिना। जिसमें नौ भागों को बनाने के लिए तीन गुच्छों में व्यवस्था की गई है। कमल मंदिर नेहरू प्लेस के पास स्थित है और कालकाजी मंदिर मेट्रो स्टेशन सिर्फ 500 मीटर की दूरी पर है।

यह मंदिर नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली के बहापुर गाँव में है। लोटस टेम्पल को डिजाइन करने के लिए 1976 में उनसे संपर्क किया गया था और बाद में इसके निर्माण की देखरेख की गई थी। 18 महीने के दौरान यूके की कंपनी फ्लिंट और नील द्वारा संरचनात्मक डिजाइन तैयार किया गया था, और निर्माण लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड के ईसीसी कंस्ट्रक्शन ग्रुप द्वारा किया गया था। इस भूमि को खरीदने के लिए आवश्यक धनराशि का बड़ा हिस्सा हैदराबाद, सिंध के अरदीश रुस्तमपुर द्वारा दान में दिया गया था, जिसने 1953 में इस उद्देश्य के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया। निर्माण बजट का एक हिस्सा बचाया गया और स्वदेशी का अध्ययन करने के लिए ग्रीनहाउस का निर्माण किया गया। पौधे और फूल जो साइट पर उपयोग के लिए उपयुक्त होंगे।

हुमायूं का मकबरा

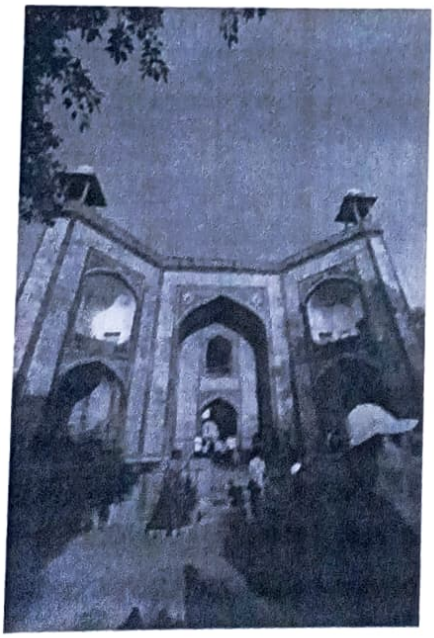

भारत के दिल्ली में मुगल सम्राट हुमायूँ का मकबरा है। इस मकबरे का निर्माण हुमायूँ की पहली पत्नी और मुख्य पत्नी, महारानी बेगा बेगम (जिन्हें हाजी बेगम के नाम से भी जाना जाता है) ने 1569-70 में करवाया था, और उनके द्वारा चुने गए फारसी वास्तुकारों, मिराक मिर्जा गियास और उनके बेटे, सैय्यद मुहम्मद द्वारा डिजाइन किया गया था। यह भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान-मकबरा था, और भारत के दिल्ली के निजामुद्दीन पूर्व में स्थित है, जो दीना-पनाह गढ़ के करीब है, जिसे पुराना किला (पुराना किला) भी कहा जाता है , जिसे हुमायूँ ने 1533 में स्थापित किया था। इतने बड़े पैमाने पर लाल बलुआ पत्थर

का उपयोग करने वाली पहली संरचना। इस मकबरे को 1993 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था और तब से इसमें व्यापक जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है, जो पूरा हो चुका है।हुमायूँ के मुख्य मकबरे के अलावा, पश्चिम में मुख्य प्रवेश द्वार से लेकर उस तक जाने वाले रास्ते पर कई छोटे स्मारक हैं, जिनमें एक स्मारक भी शामिल है।

यहां तक कि मुख्य मकबरे की तारीख भी बीस साल पहले की है; यह ईसा खान नियाज़ी का मकबरा परिसर है, जो सूरी राजवंश के शेरशाह सूरी के दरबार में एक अफगान कुलीन थे, जिन्होंने सूरी राजवंश के खिलाफ लडाई लडी थी। इसकी अनोखी सुंदरता को अनेक प्रमुख वास्तुकलात्मक नवाचारों से प्रेरित कहा जा सकता है, जो एक अतुलनीय ताजमहल के निर्माण में प्रवर्तित हुआ।

इसका निर्माण हुमायूँ के पुत्र महान सम्राट अकबर के संरक्षण में किया गया था। इसे 'मुगलों का शयनागार' भी कहा जाता है क्योंकि इसके कक्षों में 150 से अधिक मुगल परिवार के सदस्य दबे हुए हैं। हुमायूँ का मकबरा चारबाग (कुरान के स्वर्ग की चार नदियों के साथ चार चतुर्भुज उद्यान) का एक उदाहरण है, जिसमें चैनल शामिल हैं |

सयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक और सास्कृतिक सगठन (यूनेस्को) ने वर्ष 1993 में इसे विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी। यह एक इमारत शैली है जो 16वीं सदी के मध्य से 17वीं सदी के अत तक मुगल सम्राटों के सरक्षण में उत्तरी और मध्य भारत में फली-फूली। मुगल काल ने उत्तरी भारत में इस्लामी वास्तुकला के एक

महत्वपूर्ण पुनरुद्धार को चिह्नित किया। मुगल बादशाहों के सरक्षण में फारसी, भारतीय और विभिन्न प्रातीय शैलियों को गुणवत्ता और शोधन कार्यों के लिये सरक्षण दिया गया था। यह विशेष रूप से उत्तर भारत में इतना व्यापक हो गई कि इसे इडो-सरसेनिक शैली के औपनिवेशिक वास्तुकला में भी देखा जा सकता है।

मिश्रित वास्तुकला: यह भारतीय, फारसी और तुर्की स्थापत्य शैली का मिश्रण था।विविधता: विभिन्न प्रकार की इमारतें, जैसे- राजसी द्वार (प्रवेश द्वार), किले, मकबरे, महल, मस्जिद, सराय आदि इसकी विविधता थी। भवन निर्माण सामग्री: इस शैली में अधिकतर लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर का प्रयोग किया जाता था।

राष्ट्रपति भवन

रात मे फिर से लौट थे समय हमने राष्ट्रपति भवन (प्रेसिडेंट हाउस) का एक चक्कर लगाया था ।

राजपथ दिन में जितना खूबसूरत दिखता है, रात में उससे भी कहीं ज्यादा खूबसूरत दिखने लगता है। रोशनी में नहाए नॉर्थ ब्लॉक और साउथ ब्लॉक लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करते है। इडिया गेट से लेकर राष्ट्रपति भवन तक पूरा राजपथ रग बिरगी रोशनी से नहा उठता है।

राष्ट्रपति भवन भारत सरकार के राष्ट्रपति का सरकारी आवास है। वर्तमान भारत के राष्ट्रपति, उन कक्षों में नहीं रहते, जहा वाइसरॉय रहते थे,

बल्कि वे अतिथि कक्ष मे रहते है। यहाँ राष्ट्रपति आगन्तुक से मिलते है। 25 जुलाई 2022 उपरांत महामहिम द्रोपदी मुर्मू भारत की राष्ट्रपति बनायी गई है। सन १९५० तक इसे वाइसरॉय हाउस बोला जाता था। तब यह तत्कालीन भारत के गवर्नर जनरल का आवास हुआ करता था। यह नई दिल्ली के हृदय क्षेत्र मे स्थित है। इस महल मे ३४० कक्ष है और यह विश्व मे किसी भी राष्ट्राध्यक्ष के आवास से बड़ा है। भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल श्री सी राजगोपालाचार्य को यहां का मुख्य शयन कक्ष, अपनी विनीत नम्र रुचियों के कारण, अति आडंबर पूर्ण लगा जिसके कारण उन्होंने अतिथि कक्ष मे रहना उचित समझा। उनके उपरांत सभी राष्ट्रपतियों ने यही परंपरा निभाई ।

यहां के म्यूजियम अमृत उद्यान की गुलाब वाटिका मे अनेक प्रकार के गुलाब लगे है और यह कि जन साधारण हेतु, प्रति वर्ष फरवरी माह के दौरान खुलती है। इस भवन की खास बात है कि इस भवन के निर्माण मे लोहे का नगण्य प्रयोग हुआ है।

लक्ष्मी नारायण मंदिर

रात के समय हम लक्ष्मी नारायण मंदिर जिससे बिरला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। बिड़ला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। ये मंदिर लक्ष्मी नारायण को समर्पित है। साथ

ही यहां पर वेंकटेश्वर, राधा कृष्ण, मां सरस्वती, श्री राम, शिव, सूर्य और श्री गणेश जैसे विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियां भी मौजूद हैं। यह दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक है। यह लक्ष्मी नारायण मंदिर बिरला श्रृंखला का सबसे पहला मंदिर है। अतः इसे बिरला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। आज इस लेख के जरिए हम आपको यह बताएंगे कि इस मंदिर का निर्माण कैसे और कब हुआ था।

इस मंदिर को मूल रूप से 1622 में वीर सिंह देव ने बनवाया था। फिर सन् 1793 में पृथ्वी सिंह ने इसका जीर्णोद्धार कराया। फिर सन् 1938 में भारत के बड़े औद्योगिक परिवार, बिड़ला समूह ने इस मंदिर का विस्तार और पुनरोद्धार कराया। इस मंदिर का उद्घाटन 1939 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया था। गांधी जी ने इस मंदिर का उद्घाटन इस शर्त पर किया थआ कि इस मंदिर में हर जाति के लोगों को जाने की अनुमित दी जाएगी। इस मंदिर के दोनों तरफ भगवान शिव, कृष्ण और बुद्ध के मंदिर जो इनको समर्पित हैं।

लक्ष्मी नारायण मंदिर में नवरात्रि और दीपावली के समय भव्य आयोजन किया जाता है। साथ ही साथ यह मंदिर जन्माष्टमी के आयोजन के लिए भी प्रसिद्ध है। दीपावली पर इस मंदिर की साज सज्जा देखने लायक होती है। इस मंदिर के मुख्य बरामदे में लक्ष्मी नारायण की भव्य मूर्ति स्थापित है। इस मंदिर परिसर में भगवान शिव, गौतम बुद्ध और भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर भी मौजूद है। स्थित हैं।

यह मंदिर तीन मंजिला है। इस मंदिर की वास्तुकला नागारा शैली में बनाई गई है। आचार्य विश्वनाथ शास्त्री की अध्यक्षता में इस मंदिर का निर्माण किया गया है। बनारस के लगभग 100 कुशल कारीगरों ने इस मंदिर में मौजूद मूर्तियों की नक्काशी की थी। यह मूर्तियां जयपुर से लाए गए संगमरमर से बनाए गए हैं।

यह मंदिर मुख्य रूप में माता लक्ष्मी व भगवान विष्णु को समर्पित है, लेकिन यहां आपको भगवान शिव, श्रीकृष्ण व बुद्ध की भी प्रतिमा देखने को मिल जाएंगी। इस मंदिर जन्माष्टमी व दीपावली का त्योहार काफी धूमधाम से मनाया जाता है। कहा जाता है कि साल 1938 ईस्वी में बने इस मंदिर का उद्घाटन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा किया गया था।

लक्ष्मी नारायण मंदिर की वास्तुकला

उड्डीयन शैली में निर्मित यह मंदिर सफेद संगमरमर और लाल बलुआ पत्थर से मिलकर बना है, जो मुगल शैली की झलक दिखलाता है। मंदिर के पिछले हिस्से में बाग और फव्वारे

लगे हुए हैं, जो इस मंदिर की खूबसूरती में चार-चांद लगाने का काम करते हैं। मंदिर को दूर से देखने पर आपको इसमें दो-तीन मंजिला बरामदा भी दिखाई पड़ता है, जो बेहद आकर्षक नजर आता है।

हमारे भ्रमण का 3 दिन भी आ गया उस दिन हम सब विश्वविद्यालय देखने वाले थे | हम बहुत उत्साहित थे | वहा विद्यालय वहा कैसे होते है, वहा की छत्रों के लिए पढाई की सुविधा कैसी होती है यह सब जान ने के लिए हम बहुत उत्साहित थे । हमने पहले ही दिल्ली विश्वविद्यालय कला संकाय में प्रवेश लिया | उसके अंदर जाने के लिए भी हमें उससे इजाज़त नहीं मिल रही थी क्योंकि दिल्ली के हर यूनिवर्सिटी में होली का माहोल था | हर जगह छुट्टियाँ दी गई थी | पर भी आधे घंटे बाद बहुत अनुरोध के बाद में हमें अंदर जाने मिला |

दिल्ली विश्वविद्यालय फैकल्टी आर्ट्स

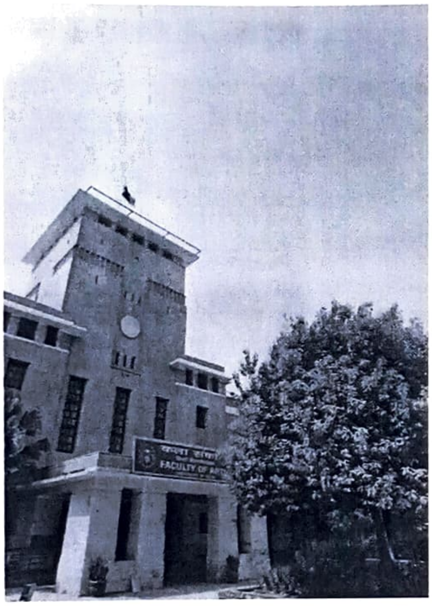

देश का एक प्रमुख विश्वविद्यालय है, जिसे उच्च शैक्षणिक मानकों, विविध शैक्षिक कार्यक्रमों, प्रतिष्ठित संकाय, शानदार पूर्व छात्रों, विभिन्न सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों और आधुनिक बुनियादी ढांचे की एक सम्मानित विरासत और अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा प्राप्त है। विश्वविद्यालय ने अपने अस्तित्व के अनेक वर्षों में, उच्चतम वैश्विक मानकों और उच्च शिक्षा में सर्वोत्तम प्रथाओं को कायम रखा है। राष्ट्र निर्माण की इसकी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का दृढ़ता से पालन करने की सदिच्छा इसके आदर्श वाक्य: 'निष्ठा धृति सत्यम्' (समर्पण, स्थिरता और सत्य) में परिलक्षित है।

वर्ष 1922 में तत्कालीन केंद्रीय विधान सभा के अधिनियम द्वारा एकात्मक, शिक्षण और आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित, इस विश्वविद्यालय की शिक्षण, अनुसंधान और सामाजिक पहुँच में उत्कृष्टता के लिए एक सुदृढ़ प्रतिबद्धता ने विश्वविद्यालय को अन्य विश्वविद्यालयों के लिए आदर्श और पथ प्रदर्शक बना दिया है। भारत के राष्ट्रपति

विश्वविद्यालय के विजिटर, उप-राष्ट्रपति इसके कुलपति और भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश विश्वविद्यालय के सम-कुलपति हैं।

तीन महाविद्यालयों और 750 छात्रों के साथ प्रारंभ किया गया, यह विश्वविद्यालय 16 संकायों, 80 से अधिक शैक्षणिक विभागों, महाविद्यालय की समान संख्या और सात लाख से अधिक छात्रों सहित भारत के सबसे बड़े विश्वविद्यालयों में से एक के रूप में विकसित हुआ है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित 500 से अधिक कार्यक्रमों को अकादमिक और कार्यकारी परिषदों द्वारा अनुमोदित किया जाता है, जिसमें से 209 कार्यक्रमों पर एनएसीसी मान्यता देने के लिए विचार किया जा रहा है। बाकी कार्यक्रम अलग-अलग मान्यता प्राप्त महाविद्यालयों में चलाये जा रहे हैं। भारत और विदेशों से आने वाले छात्रों और संकायों के साथ, विश्वविद्यालय मनसा (विचार), वाचा (भाषण) और कर्मणा (क्रिया) उत्कृष्टता, अखंडता और स्पष्टता के प्रतीक के रूप में उभरा है।

तत्कालीन उप कुलपति, सर मौरिस ग्वेयर ने एक प्रतिष्ठित संकाय के आदर्श के रूप में कार्य करने के महत्व को महसूस करते हुए, पूरे देश में निरंतर प्रतिभाओं की खोज की और इस विश्वविद्यालय में भौतिकी में प्रोफेसर डी. एस. कोठारी, रसायन शास्त्र में प्रो. टी.आर. शेषाद्रि, वनस्पति विज्ञान में प्रो. पी. माहेश्वरी और प्राणि-विज्ञान में एम.एल. भाटिया जैसे प्रख्यात व्यक्ति शामिल हुए।

पाँच विभागों अर्थात् रसायन विज्ञान, भूविज्ञान, प्राणी विज्ञान, समाजशास्त्र और इतिहास को उन्नत अध्ययन केंद्रों का दर्जा दिया गया है। उन्नत अध्ययन के इन केंद्रों ने अपने-अपने क्षेत्रों में शिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में

अपने लिए उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में एक जगह बना ली है। इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय के अनेक विभागों को उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक कार्यों की मान्यता में यूजीसी के विशेष सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत अनुदान प्राप्त हो रहा है। 10 विभागों (जर्मनिक एंड रोमांस अध्ययन, हिंदी, फारसी, भूगोल, संगीत, पूर्व एशियाई अध्ययन, नृविज्ञान, गणित, बी. आर. अम्बेडकर, एम आई एल) को डीआरएस के अंतर्गत अनुदान मिल रहा है, 2 विभागों (बौद्ध अध्ययन, अंग्रेजी) को डीएसए के अंतर्गत अनुदान मिल रहा है, 3 विभागों (अंग्रेजी, बौद्ध अध्ययन, सामाजिक कार्य) को एआईएसएचएसएस के अंतर्गत अनुदान मिल रहा है और 3 विभागों (अफ्रीकी अध्ययन, पूर्व एशियाई अध्ययन,

विकासशील देशों के अनुसंधान केंद्र) को क्षेत्रीय अध्ययन कार्यक्रमों के अंतर्गत अनुदान मिल रहा है।

विश्वविद्यालय के प्रौढ, सतत शिक्षा और विस्तार तथा महिला अध्ययन और विकास केंद्र भी यूजीसी से विशेष निधि प्राप्त कर रहे हैं। विश्वविद्यालय को आज विभिन्न महाविद्यालयों में स्थित पुस्तकालयों के अलावा 15 बड़े पुस्तकालय होने का गौरव प्राप्त है। अब भौतिकी और रसायन विज्ञान विभागों के समीप स्थित विश्वविद्यालय विज्ञान इंस्ट्रूमेंटेशन केंद्र (यूएसआईसी) में कई परिष्कृत और उच्च स्तरीय अनुसंधान उपकरण हैं। इन उपकरणों का उपयोग विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर विभागों के साथ-साथ दिल्ली और इसके आस-पास के कई अन्य संस्थानों के शिक्षक और अनुसंधान विद्वान करते है। विश्वविद्यालय ने हाल ही में उत्तर और दक्षिण परिसरों में सभी महाविद्यालयों और विभागों को जोड़ने वाला फाइबर-ऑप्टिक नेटवर्क लगाया है।

जब दिल्ली विश्वविद्यालय ने तेजी से बढ़ते शहर से तालमेल रखने के लिए कई दिशाओं में विस्तार किया, तब दक्षिण दिल्ली के निवासियों के बीच पहुँच की सुविधा के लिए 1973 में दक्षिण परिसर की स्थापना की गई। 1984 में इसे धौला कुआँ के पास बेनिटो जुआरेज़ रोड के अपने वर्तमान स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया। यह परिसर अब 69 एकड़ में फैले हरे, पहाड़ी क्षेत्रों में फैला हुआ है और इसकी इमारतों का प्राकृतिक परिवेश के साथ आकर्षक मेल है। विभिन्न विभाग कला संकाय और अंतर-विषयक एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान संकाय में स्थित हैं। एस.पी. जैन सेंटर फॉर मैनेजमेंट स्टडीज भी दक्षिण दिल्ली परिसर में स्थित है। इनके अलावा, परिसर में एक अच्छा पुस्तकालय, एक स्वास्थ्य केंद्र, एक बैंक, एक डाकघर, डीटीसी पास अनुभाग और प्रशासनिक तथा परीक्षा ब्लॉक हैं। दक्षिण परिसर में संकाय सदस्यों और गैर-शिक्षण कर्मचारियों के लिए कुछ आवासीय क्वार्टर भी हैं। बाहरी छात्रों को तीन छात्रावासों में आवास की सुविधा दी जाती है। हमने हिंदी विभाग का एक चक्कर लगाया वहा की कक्षा कैसी होती है,वहा के पढाई की प्रणाली को जाने की कोशिश की वहा के शिक्षक वर्ग से भी बातचीत की फिर हम वहां से निकल आए।

उसके बाद हम लोग अगले विश्वविद्यालय गए वह थी।

हिंदू विश्वविद्यालय

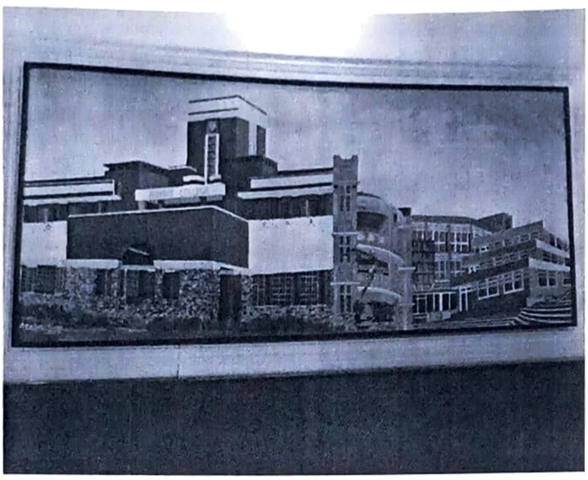

हिंदू विश्वविद्यालय के टॉप कॉलेजों में शामिल 'हिन्दू कॉलेज' (Hindu College) आर्ट्स और कॉमर्स विषयों की पढ़ाई के लिए देश के प्रमुख कॉलेजों में से एक माना जाता हैं। यहां हर साल देश-विदेश से 12वीं कक्षा के बाद लाखों स्टूडेंट्स अंडरग्रेजुएट और पोस्ट-अंडरग्रेजुएट कोर्सेज के लिए अप्लाई करते हैं। हिंदू कॉलेज एक ऐसा प्रसिद्ध कॉलेज है जहां से हमारे देश के बहुत से सुप्रसिद्ध हस्तियों ने अपनी ग्रेजुएशन कंप्लीट की हैं और देश-विदेश में भारत का नाम रौशन किया हैं।

यहां के कॉम्पिटिटिव एनवायरमेंट, टॉप फैकल्टी और इंफ्रास्ट्रक्चर के कारण छात्रों को उनके द्वारा चुनी गई स्ट्रीम में आगे बढ़ने के लिए एक दिशा मिलती है। अगर आप भी हिंदू कॉलेज में पढ़कर अपना सुनहरा भविष्य बनाना चाहते हैं तो हिंदू कॉलेज के इस ब्लॉग को अंत तक जरूर पढ़ें।

हिंदू कॉलेज का इतिहास

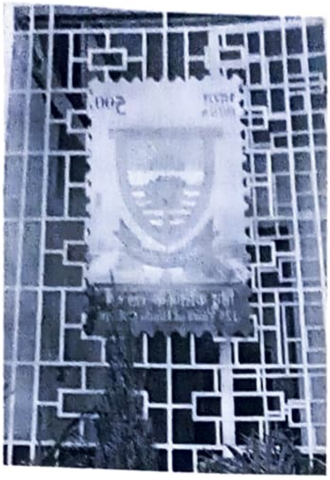

सन 1899 में स्थापित, हिंदू कॉलेज का एक गौरवशाली अतीत है जो इसे देश और दिल्ली शहर से निकटता से जोड़ता है। हिंदू कॉलेज की स्थापना स्वर्गीय "श्री कृष्ण दासजी" ने सन् 1899 में की थी। सन 1922 में हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के समय तक, हिन्दू कॉलेज अपनी सामान्य शुरुआत से विकसित हो चुका था।

हिंदू विश्वविद्यालय के सबसे पुराने और पहले से ही प्रसिद्ध कॉलेजों में से एक के रूप में, हिंदू कॉलेज स्वतंत्र भारत के युग में छात्र बॉडी, टीचिंग स्टाफ और सुविधाओं के साथ स्थापित हुआ था। जो इसकी स्थापना के बाद से लगातार बढ़े हैं। सन 1953 में, अपने कश्मीरी गेट परिसर की क्षमताओं से परे विकसित होने के बाद, हिन्दू कॉलेज विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर (North Campus) के बीच में अपने वर्तमान स्थान पर स्थापित हुआ।

हिंदू कॉलेज को "नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क" (NIRF) द्वारा वर्ष 2023 में 02 रैंक प्राप्त हुई है। हिंदू कॉलेज ने शैक्षणिक उत्कृष्टता को जारी रखते हुए अपनी यात्रा के 122 वर्ष पूरे कर लिए हैं। हिंदू कॉलेज को दिल्ली विश्वविद्यालय के आर्ट्स और कॉमर्स विषयों की स्टडी के लिए टॉप कॉलेजों में से एक माना जाता हैं। यहां टॉप फैकल्टी के साथ साथ विद्यार्थियों को बेस्ट इंफ्रास्ट्रक्चर, प्ले ग्राउंड, रिसर्च लैब और लाइब्रेरी की सुविधा मिलती हैं। हिंदू कॉलेज में न्यूनतम फीस में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा विद्यार्थियों को मिलती हैं। यहां से पढ़ने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास होता है। हिंदू कॉलेज का कैंपस बहुत बड़ा है जो करीब 25 एकड़ में फैला हुआ है, जो कि नार्थ कैंपस के सबसे बेहतरीन एरिया में स्थित है। हिंदू कॉलेज में दूसरे राज्यों से आए विद्यार्थियों के लिए हॉस्टल की व्यवस्था है, जिसमें करीब 200 विद्यार्थी रह सकते हैं।

कॉलेज का विवरण: दिल्ली यूनिवर्सिटी के टॉप कॉलेजों में शुमार हिंदू कॉलेज की स्थापना स्वर्गीय श्री कृष्ण दासजी ने सन् 1899 में की थी. आर्ट और कॉमर्स विषयों की पढ़ाई के मामले में हिंदू कॉलेज देश के प्रमुख संस्थानों में से एक माना जाता है. इंडिया टुडे-नीलसन बेस्ट कॉलेज सर्वे 2016 में हिंदू कॉलेज को टॉप आर्ट्स कॉलेज की लिस्ट में 8वां स्थान दिया गया है. सर्वे 2016: ये हैं देश के बेस्ट कॉलेज

इस कॉलेज के छात्र रहे कई लोग देश के उद्योग, राजनीति और मीडिया समेत तमाम क्षेत्रों की हस्तियां हैं . हिंदू कॉलेज प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में स्टूडेंट्स को उनके द्वारा चुने गए

क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए एक दिशा प्रदान करता है. ढांचागत सुविधाओं के अलावा, कॉलेज का सौहार्दपूर्ण और समृद्ध वातावरण अपने आप में एक मिसाल है.

सार्वभौमिक है हिंदू कॉलेज का चरित्र - प्रो अंजू श्रीवास्तव

@ सिटी रिपोर्टर

दिल्ली/हिंदू कालेज का चरित्र और स्वभाव सार्वभौमिक है। यहां भारत के सभी राज्यों के साथ दुनिया के अनेक देशों के विद्यार्थी आते रहे हैं। हिंदू कॉलेज की प्राचार्य प्रो अंजू श्रीवास्तव ने परिसर में गोवा विश्वविद्यालय से आए शैक्षणिक समूह का स्वागत करते हुए कहा कि यात्रा और भ्रमण से शिक्षा में नवाचार बढ़ते हैं। इससे पहले गोवा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के छब्बीस विद्यार्थियों के दल का स्वागत किया गया। हिंदी विभाग की प्रभारी प्रो रचना सिंह ने विभाग की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी और विभाग द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के अंक बताए। उन्होंने विभाग की संस्थाओं के बारे में भी जानकारी दी।

विभाग के अध्यापक डा पल्लव ने महाविद्यालय के शिक्षण इतिहास के बारे में बताया कि भारतसिंह उपाध्याय और कृष्ण दत्त पालीवाल जैसे मूर्धन्य विद्वान हिंदी विभाग में अध्यापन कर चुके हैं।

गोवा विश्वविद्यालय के डा दीपक वर्क और डा श्वेता गोवेकर ने अपने दल का परिचय दिया। आयोजन में विभाग के डा नीलम सिंह और डा नौशाद अली ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दल ने हिंदू कालेज परिसर का भ्रमण किया और यहां की विभिन्न शोध परियोजनाओं को भी देखा। अंत में विभाग के पूर्व छात्र एवं शोधार्थी रोहताश कुमार ने आभार व्यक्त किया।

हिंदू कॉलेज का विशाल कैंपस करीब 25 एकड़ जमीन में फैला हुआ है. हिंदू कॉलेज का कैंपस दिल्ली यूनिवर्सिटी के नॉर्थ कैंपस के सबसे बेहतरीन एरिया में स्थित है. हिंदू कॉलेज का हॉस्टल भी बेहद खूबसूरत है और इसमें करीब 200 छात्रों के ठहरने की व्यवस्था है.

उसके बाद वहां एक पुराने छात्र मिले उन्होंने हमें हिंदू यूनिवर्सिटी की और थोड़ी जानकारी देते हुवे कहा,हिंदू कॉलेज की ख़ास बात उसके मालिक की हैं जिन्हें Saint Stephen कॉलेज में दाखिला नहीं मिला।क्योंकि वह एक पॉश ख़ानदान से नहीं आते थे। तभी उन्होंने ठान लिया कि वह खुदका एक कॉलेज बनाएंगे। उस कॉलेज में रिक्शावाले का लड़का और राजनेता का लड़का दोनों में समान अंतर होगा। दोनों के बच्चें अपनी पढ़ाई पूरी करेंगे यह उसकी खास बात हैं। 1999 में इसकी स्थापना की गई और यह इसका तीसरा सेंटर हैं। पुरानी दिल्ली से होकर किनारे बाजार से होते हुए इसकी स्टेप की गई। इसकी दूसरी सबसे बड़ी खास बात हैं कि यह दिल्ली विश्वविद्यालय के पहले बना हैं। 1989 में saint stivan, 1970 में Ramjese कॉलेज और 1999 में हिंदू कॉलज को heritege कॉलेज बोला जाता हैं। heritage इसलिए भी बोला जाता है क्योंकि जितने भी स्वतंत्रता सेनानी थे वह इस कॉलेज के बच्चों के प्रतिनिधि थे। वह बच्चों का मत लेकर निर्णय लिया करते थे। यहां जानकारी हम उनसे प्राप्त की थी ।

मदर टेरेसा क्रिसेंट

हमने रास्ते में ऐसे जगह को भी देखा जिसका नाम था,**मदर टेरेसा क्रिसेंट** उस समय हम ट्रैफिक में फस गए थे और उन पुतलो को देख रहे थे।

मदर टेरेसा क्रिसेंट मार्ग लुटियंस दिल्ली की महत्वपूर्ण सड़कों में से एक है और ऐसा होने का मुख्य कारण यह है कि यह राष्ट्रपति भवन एस्टेट के ठीक पीछे स्थित है। इस विशेष सड़क से पूरे राष्ट्रपति भवन तक पहुंचा जा सकता है। मदर टेरेसा क्रिसेंट मार्ग राष्ट्रपति संपति के पश्चिम में स्थित है जो राष्ट्रपति के घर के प्रवेश मार्गों की सुविधा प्रदान करता है। इसके अलावा, यह सड़क विभिन्न विभागों के राष्ट्रीय मुख्यालयों के लिए घर के रूप में कार्य करती है और इसलिए संभवतः पूरे क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण सड़कों में से एक है। पहले इसे वेलिंगटन क्रिसेंट मार्ग के नाम से जाना जाता था और यह कनेक्टिंग दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह नॉर्थ एवेन्यू से साउथ एवेन्यू तक एक अर्ध-वृत्ताकार मार्ग लेता है। संपत्ति के दूसरी ओर वन क्षेत्र हैं। यह यातायात कनेक्टिविटी के दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि राजपथ के उत्तर की ओर से दक्षिणी ओर की ओर आने-जाने के लिए इस पर दैनिक आधार पर भारी दिल्ली यातायात का अनुभव होता है।

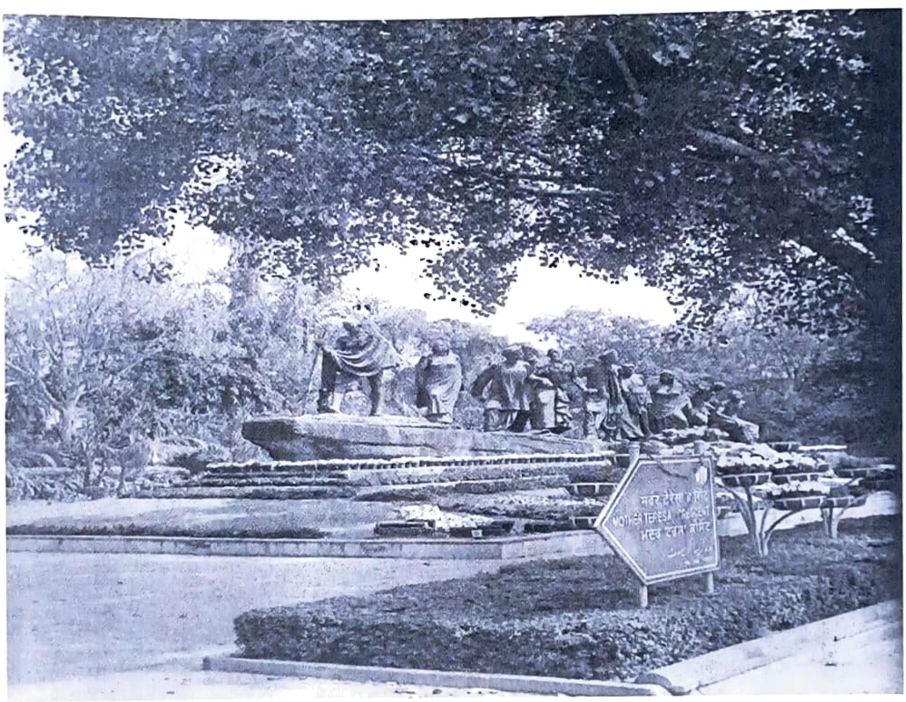

अवधारणा

स्ट्रीटस्केपिंग परियोजना का आधार मामला यातायात के प्रवाह को ध्यान में रखते हुए इस सड़क को विकसित करना, वाहन चलाते समय सड़क के भीतर एक माहौल बनाना और भवन में प्रवेश करते समय विरासत को बनाए रखना, जॉगर्स, यात्रियों, दोपहिया वाहनों के यातायात की मिश्रित प्रकृति को समझना था। चार पहिया वाहन, उच्च प्रोफाइल प्रतिष्ठित कारें, राष्ट्रपति गार्ड घोड़े। चुनौतियों में से एक यह थी कि डिज़ाइन करते समय विभिन्न प्रकार के फुटफॉल का ध्यान रखना होगा। इसके अलावा सड़क से ही एक बयान तैयार करने की जरूरत है। इसे एक छोटे शहर की सड़क की तरह होना चाहिए जहां केबल, संचार प्रणाली, जल निकासी व्यवस्था का मजबूत तरीके से ध्यान रखा गया हो।

डिज़ाइन

यह खंड विभिन्न प्रकार के पैदल यात्रियों, पैदल यात्रियों के राहत बिंदु और बैठने की जगह पर विशेष जोर देता है। इसके अलावा, हरे बफर जोन द्वारा पैदल यात्रियों को यातायात से दूर रखने के लिए व्यापक कार्य किया गया, विश्राम स्थलों के लिए पॉकेट बनाए गए और घोड़े के पथ का निर्माण किया गया। उन्हीं पात्रों को सामने लाने के लिए प्रेसिडेंशियल इस्टेट के अंदर भी बहुत सारे अध्ययन किए गए।

स्ट्रीट सेक्शन का विवरण संचार प्रणालियों, जल निकासी प्रणालियों जैसी सभी बुनियादी ढांचा लाइनों का ख्याल रखता है और इसे ऐसी स्थिति में रखा जाता है ताकि इसकी मजबूत प्रकृति का अनुमान लगाते हुए आसान और गैर-विनाशकारी मरम्मत कार्य प्रदान किया जा सके। इस वादे के साथ उद्देश्य ऊंचे थे कि हैच, नाली इत्यादि बिछाने के साथ कोई खुदाई नहीं होगी। पानी को पूरी तरह से सूखा दिया जाना चाहिए, पूरी तरह से स्वयं सफाई गड्ढों के साथ संग्रहित किया जाना चाहिए, जिसके लिए कोई / कम रखरखाव की आवश्यकता नहीं होती है। डिज़ाइन में उपरोक्त सभी सेवाएँ शामिल थीं।

राष्ट्रपति के घर की विशेषताओं पर एक विस्तृत अध्ययन किया गया था और लुटियंस वायसराय चरित्र को सामने लाने के लिए सड़क के डिजाइन में इसे समाहित किया गया है, जो शहर के किसी भी हिस्से में स्पष्ट नहीं है।

खंड के दोनों किनारे 3.5 किमी लंबे हैं, राष्ट्रपति संपत्ति से निकास से प्रभावित स्थानीय प्रसार के साथ चरित्र में परिवर्तन होता है। यह न केवल मोटर चालकों को बल्कि पैदल चलने

वालों को भी विविधता का एहसास कराता है और इस प्रकार लुटियंस दिल्ली की विशिष्टता को मिश्रित करके इसे शहर के बाकी हिस्सों से अलग बनाता है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

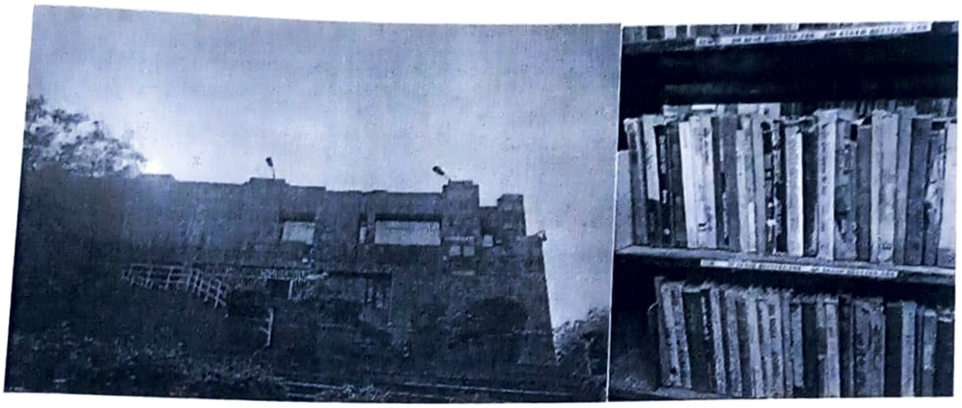

जिससे हम JNU college के नाम से जाना जाता है । 1969 में स्थापित, एक जीवंत परिसर है। विश्वविद्यालय के बारे में 1000 एकड़ का एक क्षेत्र है और वर्तमान में 7300 छात्रों को 17 छात्रावासों में रहने वाले और लगभग 550 प्रतिष्ठित संकायों के तहत अध्ययन कर रहे हैं। जेएनयू एक विश्वविद्यालय है जो शिक्षा के हर क्षेत्र में नई ऊंचाइयों बनाने में और समाज में सामाजिक जागरूकता का पोषण करने में विश्वास रखता है । जेएनयू 4 विशेष केन्द्रों गुणवत्ता की शिक्षा और सामाजिक जागरूकता प्रदान करने के लिए सहित 10 विभिन्न स्कूलों की है।

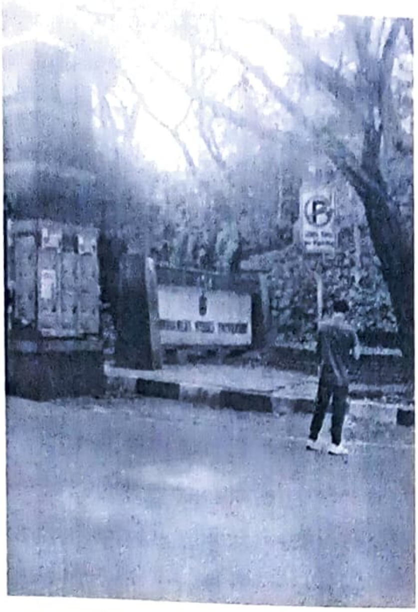

भाषा साहित्य और सांस्कृतिक अध्ययन (SLL & Cs) स्कूल भाषा का न केवल शिक्षा बल्कि अन्य समाज / देश की सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं प्रदान करने के लिए जिम्मेदार है। अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन (एसआईएस) के स्कूल में दुनिया की राजनीति और दुनिया समाज पर उनके प्रभाव पर एक अवलोकन प्रदान करने की जिम्मेदारी इस स्कूल बहुत ज्यादा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की सलाहकार समिति में सदस्यों को उपलब्ध कराने में लगी हुई है। जेएनयू में अच्छी तरह से भी विज्ञान में अनुसंधान के लिए जाना जाता है, और हमेशा सुधारने और विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान करने के लिए तो हम पर्यावरण, भौतिक विज्ञान के लिए विभिन्न स्कूलों और आदि शारीरिक विज्ञान के स्कूल (एसपीएस), लाइफ साइंसेज के स्कूल (SLS), विशेष छात्रों को प्रोत्साहित पर्यावरण के अध्ययन के सूक्ष्म जीव विज्ञान, स्कूल (एसईएस), कंप्यूटर और प्रणालियों विज्ञान के स्कूल, जैव प्रौद्योगिकी के स्कूल (एसबीटी), सेंटर आण्विक चिकित्सा और नेनौसाइंस के लिए के लिए केंद्र। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के लक्ष्य के छात्रों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करना है।

हमने वहां के छात्रों से भी बात चीत की उनसे भी हम बहुत से जानकारी मिली हैं:- जेएनयू के प्लेसमेंट सेल के प्राथमिक उद्देश्य यूजी, पीजी, एम फिल और पीएचडी छात्रों के लिए अपने खेतों का सबसे अच्छा संगठनों में कैंपस प्लेसमेंट, और सरकारी संस्थानों प्रदान करना है। यह छात्रों में सही प्रशिक्षण देने के लिए उन्हें रोजगार के लिए सक्षम है और सरकार और अन्य संगठनों में इंटर्नशिप करने का अवसर प्रदान करने के लिए करना है।

प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के लक्ष्य को रोजगार के अवसर और कौशल छात्रों तकनीकी कठिनाइयों को पूरा करने के प्रदान करना है। इंटर्नशिप / प्लेसमेंट के लिए छात्रों का पंजीकरण। सेल पंजीकृत छात्रों के लिए परामर्श सत्र / कैरियर मार्गदर्शन का आयोजन करता है। कॉलेज परिसर पर उनके पूर्व नियुक्ति बात करती है और आचरण परीक्षा और साक्षात्कार पेश करने के लिए विभिन्न संगठनों को सक्रिय करें। साक्षात्कार के लिए छात्रों के लिए कार्यशालाओं का संचालन करने के विभिन्न संगठनों को शामिल करें। प्लेसमेंट सेल भी मूल अंग्रेजी कक्षाओं के छात्रों को संचार कौशल विकसित करने में मदद करने के आयोजित करता है। विभिन्न संस्थानों ने भी, विभिन्न कौशल में छात्रों को प्रशिक्षण संसाधन व्यक्तियों के

साथ सेल की मदद करने और छात्रों के लिए पाठ्यक्रमों का संचालन करने से उनके समर्थन का विस्तार होगा।

हमने वहां के लाइब्रेरी को भी देखा वहा के किताबों को देखा। हम जिस समय वहां गए थे वहां पर उस दिन स्टूडेंट इलेक्शन चल रहा था । वहां के इलेक्शन के माहौल को देख कर हम सब बहुत अचम्भित रह गए, वह माहौल किसी साधारण स्टूडेंट इलेक्शन की तरह लग ही नहीं रहा था। छात्रों की नारेबाज़ी आदि बातों को हमने अनुभव किया था।

कुतुब मीनार

कुतुब मीनार की ऊंचाई 72.5 मीटर है। इसमें 379 सीढ़ियां हैं, जो आपको मीनार की चोटी तक ले जाती हैं। आपको बता दें, जमीन पर इस इमारत का व्यास 14.32 मीटर है, जो शिखर तक जाने तक 2.75 मीटर रह जाता है। इस इमारत की स्थापत्य कला देखने में बेहद खूबसूरत लगती है। शायद आपको ये बात पता न हो, कुतुब कॉम्प्लेक्स में घूमने पर पर्यटकों को 10 मिनट की फिल्म भी दिखाई जाती है, जिसमें इमारत और कॉम्प्लेक्स में स्थित अन्य इमारतों के बारे में जानने को मिलता है।

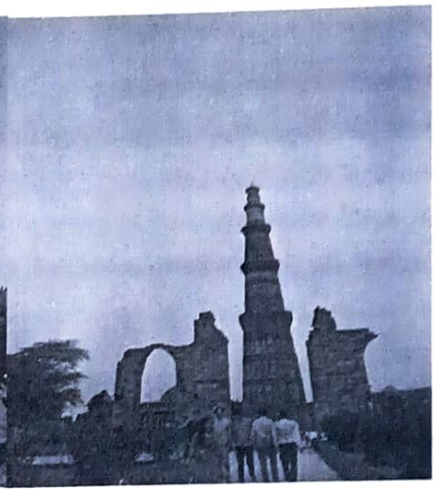

कुतुब मीनार का ऊपरी हिस्सा बिजली गिरने की वजह से नष्ट हो गया था, जिसका निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने फिर से किया था। बाद के टाइम के फ्लोर पहले के फ्लोर्स से बेहद अलग हैं, क्योंकि इन्हें सफेद संगमरमर से बनाया गया था।

कुतुब मीनार कई बड़ी ऐतिहासिक इमारतों से भी घिरा हुआ है और ये सब कुतुब कॉम्प्लेक्स के अंदर आती हैं। इस कॉम्प्लेक्स में आपको लौह स्तंभ, अलाई दरवाजा, इल्तुतमिश की

कब्र, अलाई मीनार, अलाउद्दीन का मदरसा, कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, जैसी इमारतें हैं, जो पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करती हैं।

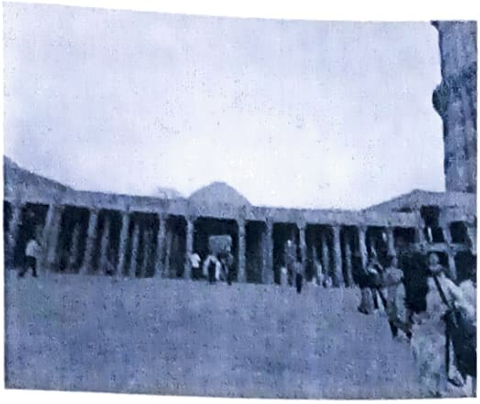

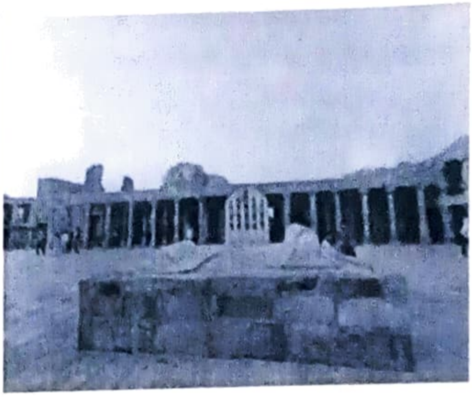

टावर की हर मंजिल में बहुत ही शानदार शिल्प कौशल है। इमारत के ऊंचे टॉवर पर पहुंचकर आप दिल्ली शहर का शानदार और अद्भुत नजारा देख सकते हैं। आपको बता दें, इस खूबसूरत निर्माण में संगममार और लाल बलुआ पत्थर का इस्तेमाल किया गया है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इस ऐतिहासिक मीनार को बनाने के लिए 27 हिंदू मंदिरों को तोड़कर पत्थर दिए गए थे। लौह स्तंभ का निर्माण गुप्त साम्राज्य के चंद्रगुप्त द्वितीय ने दो हजार साल से भी पहले किया था, लेकिन इसकी विशेषता यह है कि इतने वर्षों के बाद भी इस लोहे के स्तंभ में अभी तक जंग नहीं लगी है।

सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी खुद को महान साबित करने के लिए कुतुब मीनार से भी ऊंचा टावर बनवाना चाहता था, जिसकी ऊंचाई कुतुब मीनार से भी दो गुनी हो। उन्होंने 'अला-ए मीनार' नाम से अपना निर्माण भी शुरू कराया, लेकिन वह सपना कभी पूरा नहीं हो पाया। अला-ए-मीनार की ऊंचाई मात्र 27 मीटर तक पहुंच गई थी कि अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद उस मीनार को पूरा करने की आवश्यकता किसी को समझ में नहीं आई। यह अधूरी इमारत कुतुब मीनार के पास मौजूद है।

कुव्वत-उल-इस्लाम कुतुब मीनार के पास ही भारत में बनने वाली पहली मस्जिद है। इस मस्जिद का नाम अंग्रेजी में "द माइट ऑफ इस्लाम मस्जिद" जिसका अर्थ है 'इस्लाम की शक्ति'। इस इमारत का निर्माण मूल रूप से इस्लाम की ताकत जाहिर करने के लिए किया गया था। इस मस्जिद का निर्माण हिन्दू मंदिर की नींव पर किया गया है। अगर आप यहां आते हैं, तो ये चीज आपको

कुतुब मीनार भारत मे दिल्ली शहर के महरौली मे ईट से बनी, विश्व की सबसे ऊँची मीनार है। दिल्ली को भारत का दिल कहा जाता है, यहाँ पर कई प्राचीन इमारते और धरोहर स्थित है। इन पुरानी और खास इमारतों मे से एक इमारत दिल्ली मे स्थित है जिसका नाम है कुतुब मीनार, जो भारत और विश्व की सबसे ऊँची मीनार है।

कुतुब मीनार भारत का सबसे खास और प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है। कुतुब मीनार दिल्ली के दक्षिण इलाके में महरौली में है। यह इमारत हिंदू-मुग़ल इतिहास का एक बहुत खास हिस्सा है। कुतुब मीनार को यूनेस्को द्वारा भारत के सबसे पुराने वैश्विक धरोहरों की सूचि में भी शामिल किया गया है। इस आर्टिकल में हम कुतुब मीनार की जानकारी और कुछ खास और दिलचस्प बातों पर पर नज़र डालेंगे।

कुतुब मीनार को लाल पत्थर और मार्बल से बनाया गया है। कुतुब मीनार की उंचाई 72.5 मीटर है और इसका डायमीटर 14.32 मीटर है। मीनार के अंदर कुल 379 सीढ़ियाँ है, जो कि गोलाई में बनी हुई है।

कुतुब मीनार का निर्माण पूरा किसने किया था इस प्रश्न का उत्तर भी आपको इसमें मिल जायेगा। दिल्ली सल्तनत के संस्थापक कुतुब-उद-दिन ऐबक ने ईस्वी सन् 1200 में कुतुब मीनार का निर्माण करवाना शुरू किया था। इसके बाद 1220 में ऐबक उत्तराधिकारी और पोते इल्तुमिश ने इस मीनार में तीन मंजिल और बनवा दी थी। इसके बाद 1369 में सबसे उपर वाली मंजिल बिजली कड़कने की वजह पूरी तरह से टूट कर गिर गई। इसके बाद फिरोज शाह तुगलक़ ने एक बार फिर से कुतुब मीनार का निर्माण करवाना शुरू किया और वो हर साल 2 नई मंजिले बनवाते रहे। उन्होंने मार्बल और लाल पत्थर से इन मंजिलों को बनवाया था। कुतुबमीनार का निर्माण करवाना शुरू ऐबक ने किया था और पूरा करवाया इल्तुतमिश ने और 1369 में मीनार को दुर्घटना के कारण टूट जाने के बाद दुरुस्त करवाया फिरोजशाह तुगलक ने।

कुतुब मीनार, एक 73 मीटर ऊंची मीनार है, जिसका निर्माण 1193 में कुतुब-उद-दीन ऐबक ने दिल्ली के अंतिम हिंदू राज्य की हार के तुरंत बाद करवाया था। इस इमारत में पांच अलग-अलग मंजिलें हैं, प्रत्येक को एक प्रोजेक्टिंग बालकनी और आधार पर 15 मीटर व्यास से शीर्ष पर सिर्फ 2.5 मीटर तक चिह्नित किया गया है।

कुतुब मीनार का नाम दिल्ली के सल्तनत कुतुब-उद-दिन ऐबक के नाम पर रखा गया है क्योंकि उन्ही ने 1199 AD में इसका निर्माण शुरू किया था। उस समय कुतुब-उद-दिन दिल्ली की सल्तनत के संस्थापक थे। बाद में उत्तराधिकार और पोते इल्तुमिश ने इसमें तीन मीनारों कर निर्माण और करवाया था ।

कुतुब मीनार के इतिहास के बारे में बात करें तो शिलालेख मीनार में अरबी और नागरी लिपि में शिलालेख हैं। जो इसके इतिहास के बारे में बताते हैं।

जब फिरोज शाह तुगलक के शासन में भूकंप के बाद कुतुब मीनार क्षतिग्रस्त हो गई थी तो इसके बाद फिरोज शाह ने इसकी मरम्मत करवाई। लेकिन इसके बाद में 1505 फिर से भूकंप की वजह से मीनार टूट गई थी जिसकी मरम्मत सिकंदर लोदी ने ने करवाई।

कुतुब मीनार का असली नाम विष्णु स्तंभ बाताया जाता है, इसके साथ इसके सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक कहा गया है।

हमारा ४ दिन की भी शुरुआत की हमने वह भी सुबह के ४ बजे यानी प्रातकाल में ही, क्योंकि वह सफर थोड़ा लम्बा था नई दिल्ली से आगरा और आगरा से मथुरा फिर मथुरा से हमने नई दिल्ली आना था । उस दिन का पूरा सफर हम बस से ही करने वाले थे । सुबह हम दिल्ली से आगरा के लिए निकल गई थे, सुबह के ६ - ६:३० होगा हम नाश्ते के लिए बस को एक ढाबे के पास रोखा और नाश्ता कर हम फिर से अपने सफर में आगे बड़ने लगे थे। हम आगरा १० -१०:३० के आस पास पहुंच गए थे । हम पहले ही ताजमहल देखने गये। ताज महल देखने जाने का आगे का सफर हमने गाईड के ज़रिए ही करना था। इसलिए हमने वहां जाकर एक गाइड का इंतज़ाम किया और आगे वह जैसा बोल रहे थे हम उन्हें फॉलो कर रहे थे पार्किंग से ताज महल जाने के लिए पहले उन्होंने गाड़ी से जाने के लिए गाड़ी रेडी किया फिर ताज महल में अंदर जाने के लिए टिकट सब उन्होंने ही किया सिर्फ हमने उन्हें पैसे दिए थे। आगे की पूरी जानकर उन्होंने हमने दी और अच्छी तरह से हमने ताज महल गुमाया था ।

ताज महल

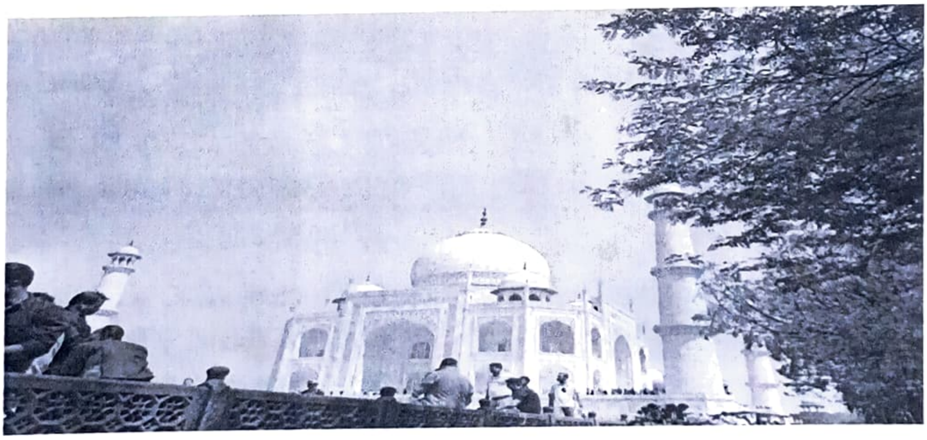

ताज महल का अर्थ है "क्राउन पैलेस" और वास्तव में यह दुनिया में सबसे अच्छी तरह से संरक्षित और वास्तुकला की दृष्टि से सुंदर मकबरा है। अंग्रेजी कवि, सर एडविन अर्नोल्ड ने ताज का वर्णन इस प्रकार किया है, "अन्य इमारतों की तरह यह वास्तुकला का एक नमूना नहीं है, बल्कि जीवित पत्थरों में गढ़े गए एक सम्राट के प्रेम के गौरवपूर्ण जुनून हैं।" यह एक रोमांस है जो संगमरमर में मनाया जाता है और कीमती और अर्ध-कीमती पत्थरों से महिमामंडित किया जाता है और यही इसकी सराहना करने का तरीका है।

ताज महल यमुना नदी के तट पर स्थित है, जो अन्यथा आगरा के महान लाल किले की रक्षा करने वाला एक विस्तृत क्षेत्र है, जो मुगल सम्राटों का केंद्र था, जब तक कि वे 1637 में अपनी राजधानी दिल्ली नहीं ले गए। इसे पांचवें मुगल सम्राट ने बनवाया था। शाहजहाँ ने 1631 में अपनी तीसरी लेकिन सबसे पसंदीदा पत्नी, वास्तव में एक आत्मिक साथी मुमताज महल, एक मुस्लिम फ़ारसी राजकुमारी की याद में। 13वें बच्चे को जन्म देने के बाद विद्रोह को कुचलने के अभियान में बुरहानपुर में अपने पति के साथ जाते समय उनकी मृत्यु हो गई। मौत ने सम्राट को इस कदर कुचल दिया कि कहा जाता है कि कुछ ही महीनों में उसके सारे बाल और दाढ़ी बर्फ से सफेद हो गए थे।

जब मुमताज महल जीवित थी, तो उसने बादशाह से चार वादे किये: पहला, कि वह ताज का निर्माण कराये; दूसरा, कि उसे दोबारा शादी करनी चाहिए; तीसरा, वह उनके बच्चों के प्रति दयालु हो; और चौथा, कि वह उनकी बरसी पर उनकी कब्र पर जाएं। हालाँकि, खराब स्वास्थ्य और अपने ही बेटे और सिंहासन के उत्तराधिकारी, औरंगजेब द्वारा नजरबंद किए जाने के कारण, उन्हें आखिरी वादा पूरा करने से रोक दिया गया था।

ताज एक ऊंचे लाल बलुआ पत्थर के आधार पर बना है जिसके शीर्ष पर एक विशाल सफेद संगमरमर की छत है जिस पर चार पतली मीनारों से घिरा प्रसिद्ध गुंबद है। गुंबद के भीतर रानी की रत्न जड़ित कब्र है। कारीगरी इतनी उत्कृष्ट है कि ताज को "दिग्गजों द्वारा डिजाइन किया गया और जौहरियों द्वारा तैयार किया गया" के रूप में वर्णित किया गया है। ताज में एकमात्र असममित वस्तु सम्राट का ताबूत है जिसे बाद में रानी के ताबूत के बगल में बनाया गया था।

किवदंती है कि अपनी आठ साल की लंबी बीमारी और कारावास के दौरान, शाहजहाँ बिस्तर पर लेटे हुए ताज को सामने की दीवार में एक विशेष कोण पर लगे हीरे के माध्यम से ध्यान से देखा करता था। बहुत खूब!

ताज से पता चलता है कि विदेशी सुंदरता की एक महिला को श्रद्धांजलि के रूप में और एक प्रेम कहानी के स्मारक के रूप में, जो हमें इन पृष्ठों के माध्यम से पढ़ने के दौरान भी तल्लीन रखती है, वास्तव में प्यार का एक स्थायी रोमांस अभी तक समाप्त नहीं हुआ है। इसके देखने वाले के लिए इसकी सूक्ष्मताएं!

गुंबद सफेद संगमरमर से बना है, लेकिन मकबरा नदी के पार मैदान के सामने स्थित है और यह पृष्ठभूमि ही है जो रंगों का जादू दिखाती है, जो उनके प्रतिबिंब के माध्यम से ताज के दृश्य को बदल देती है। दिन के अलग-अलग घंटों और अलग-अलग मौसमों में रंग बदलते हैं।

चांदनी रात में ताज एक आभूषण की तरह चमकता है, जब मुख्य मकबरे पर सफेद संगमरमर में जड़े हुए अर्ध-कीमती पत्थर इसकी चमक को बेहतर चमक के साथ प्रतिबिंबित करते हैं। ताज सुबह के समय गुलाबी, शाम को दूधिया सफेद और चंद्रमा के चमकने पर सुनहरा दिखाई देता है। वे कहते हैं कि ये परिवर्तन किसी भी प्रकार की सुंदरता के विभिन्न मूड को दर्शाते हैं।

अलग-अलग लोगों के पास ताज के बारे में अलग-अलग विचार हैं लेकिन यह कहना पर्याप्त होगा कि ताज का अपना एक जीवन है, जो संगमरमर से निकला है। वास्तुकला की कला और विज्ञान की उत्कृष्ट कृति, मुग़ल काल कहे जाने वाले युग का प्रतिनिधि, जो ताज के अंदर या बाहर किसी भी अर्थ में कुछ भी जोड़ने या हटाने के किसी भी अधिकार से आगे था।

ताज महल सुंदरता के साथ खड़ा है, यह न केवल एक पुरुष और एक महिला के बीच भावनात्मक और शाश्वत प्रेम का एक दृष्टांत है, बल्कि अन्य कारणों से भी है ।

सम्राट शाहजहाँ, जिसने 'ताज' का निर्माण करवाया था, वह इसे गंभीरता, सद्भाव, पवित्रता और आध्यात्मिकता के प्रतीक के रूप में भी बनाना चाहता था। ताज केवल शोभा और गरिमा का स्मारक नहीं है। वास्तव में, यह समस्त मानव जाति के लिए एक संदेश है कि "शुद्ध प्रेम जीवन की आत्मा है"।

ताज पूरी मानव जाति के लिए 'प्रेम और शांति' की सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत लेकिन इतनी अच्छी तरह से प्रचलित अवधारणा नहीं है, के बारे में एक अनुस्मारक है, स्वर्ग का सार, नस्लों और भौगोलिक सीमाओं के संघर्ष से मुक्त होना, इसका गंभीरता से पालन करना महत्वपूर्ण है।

ताज बस एक विदेशी सुंदरता के लिए एक राजसी श्रद्धांजलि है!अगर ताज से जुड़े मिथकों का जिक्र न किया जाए तो ताज की गाथा आधी ही कही जाएगी। कई महान इमारतों की तरह, ताज महल के भी अपने मिथक और किंवदंतियाँ हैं। ऐसा लगता है कि ताज पर गंभीर विद्वतापूर्ण शोध की तुलना में कल्पना अधिक है। कई कहानियाँ पूरी तरह से मौखिक परंपरा से संबंधित हैं और गाइडों द्वारा बताई गई हैं, कुछ इतनी स्थापित हैं कि वे स्मारक का एक लोकप्रिय इतिहास बनाते हैं और गाइडबुक में अपना स्थान बना चुके हैं, और कुछ को

विद्वानों ने अपनाया है, या यहां तक कि उनके द्वारा भी बनाया गया है। वे, और इस प्रकार विद्वानों की बहस का हिस्सा बन जाते हैं।

अंतिम श्रेणी में ताज की सबसे पुरानी कहानियाँ शामिल हैं। यहां सबसे व्यापक रूप से ज्ञात दूसरे ताज, 'काला ताज' की कहानी है, जिसे शाहजहाँ ने महताब बाग की जगह पर वर्तमान मकबरे के सामने काले संगमरमर से बनवाना चाहा था। यह जीन-बैप्टिस्ट टेवर्नियर के पास जाता है, जिन्होंने 1665 ई. में आगरा में बताया था कि 'शाहजहाँ ने नदी के दूसरी ओर अपना मकबरा बनाना शुरू कर दिया था, लेकिन उसके बेटों के साथ युद्ध ने उसकी योजना को बाधित कर दिया, और औरंगजेब, जो शासन करता है वर्तमान में, इसे पूरा करने का निपटान नहीं किया गया है। शाहजहाँ को उसके ही पुत्र और उत्तराधिकारी औरंगजेब ने बलपूर्वक नजरबंद कर दिया था। उत्तरार्द्ध अधिकांश मुद्दों पर अपने पिता से सहमत नहीं था और विशेष रूप से अपने मकबरे के रूप में काले ताज के निर्माण का विरोध करता था।

शाहजहाँ की मृत्यु के बाद, औरंगज़ेब ने बादशाह के शव को बुरहानपुर से आगरा तक एक सोने के ताबूत में रखवा दिया, केवल दो लोगों द्वारा एक नाव में ले जाया गया और उसे ताज में उसकी पत्नी के बगल में दफनाया गया। शायद सबसे सरल तरीका.

अपनी प्रेमिका की इच्छा पूरी करने वाले बादशाह शाहजहाँ की अपनी प्रिय रानी मुमताज महल के प्रति शोक व्यक्त करने के लिए काला ताज बनवाने की इच्छा उनकी मृत्यु के बाद भी पूरी नहीं हो सकी। वह प्रेम की पवित्रता में शांति थी ।

अपने सामंजस्यपूर्ण अनुपात और सजावटी तत्वों के तरल समावेश में, ताज महल को बेहतरीन उदाहरण के रूप में जाना जाता हैमुगल वास्तुकला , भारतीय, फारसी और इस्लामी शैलियों का मिश्रण । अन्य आकर्षणों में जुड़वां मस्जिद इमारतें (मकबरे के दोनों ओर सममित रूप से स्थित), सुंदर उद्यान और एक संग्रहालय शामिल हैं। दुनिया की सबसे खूबसूरत संरचनात्मक रचनाओं में से एक , ताज महल दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित स्मारकों में से एक है, जिसे देखने हर साल लाखों पर्यटक आते हैं। परिसर को यूनेस्को द्वारा नामित किया गया था 1983 में विश्व धरोहर स्थल ।

परिसर की योजनाओं का श्रेय उस काल के विभिन्न वास्तुकारों को दिया गया है, हालांकि मुख्य वास्तुकार संभवतः फ़ारसी मूल के भारतीय उस्ताद अहमद लाहौरी थे। परिसर के पांच प्रमुख तत्व- मुख्य प्रवेश द्वार, उद्यान,मस्जिद ,जवाब (शाब्दिक रूप से "उत्तर"; मस्जिद को

प्रतिबिंबित करने वाली एक इमारत), और मकबरे (इसके चार मीनारों सहित) - की कल्पना और डिजाइन मुगल भवन अभ्यास के सिद्धांतों के अनुसार एक एकीकृत इकाई के रूप में किया गया था, जिसने बाद में किसी भी अतिरिक्त या परिवर्तन की अनुमति नहीं दी थी।

इसका निर्माण लगभग 1632 में शुरू हुआ था । लगभग 1638-39 तक मकबरे को पूरा करने के लिए भारत, फारस , ओटोमन साम्राज्य और यूरोप से 20,000 से अधिक श्रमिकों को नियोजित किया गया था ; सहायक इमारतें 1643 तक समाप्त हो गईं, और सजावट का काम कम से कम 1647 तक जारी रहा । कुल मिलाकर, 42 एकड़ (17-हेक्टेयर) परिसर के निर्माण में 22 साल लगे।

एक परंपरा यह बताती है कि शाहजहाँ ने मूल रूप से अपने अवशेषों को रखने के लिए नदी के पार एक और मकबरा बनाने का इरादा किया था। उस संरचना का निर्माण काले संगमरमर से किया गया था, और इसे एक पुल द्वारा ताज महल से जोड़ा गया था। हालाँकि , उन्हें 1658 में उनके बेटे औरंगजेब द्वारा अपदस्थ कर दिया गया था , और उन्हें जीवन भर आगरा किले में कैद रखा गया था।

वास्तुकला:-

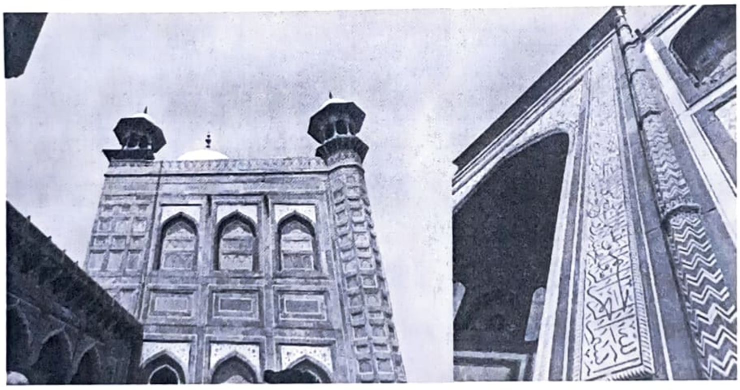

23 फीट (7 मीटर) ऊंचे चौड़े चबूतरे के बीच में स्थित , यह मकबरा सफेद संगमरमर का है जो सूरज की रोशनी या चांदनी की तीव्रता के अनुसार रंगों को प्रतिबिंबित करता है। इसके चार लगभग समान अग्रभाग हैं, प्रत्येक के शीर्ष पर 108 फीट (33 मीटर) तक ऊंचा एक चौड़ा केंद्रीय मेहराब है और छोटे मेहराबों को शामिल करते हुए चैंफर्ड (तिरछे) कोने हैं।

राजसी केंद्रीय गुंबद, जो अपने अंतिम सिरे पर 240 फीट (73 मीटर) की ऊंचाई तक पहुंचता है , चार छोटे गुंबदों से घिरा हुआ है। मुख्य गुंबद के अंदर की ध्वनिकी के कारण बांसुरी का एक स्वर पांच बार गूंजता है। मकबरे का आंतरिक भाग एक अष्टकोणीय संगमरमर कक्ष के चारों ओर व्यवस्थित है जो कम नक्काशी वाली नक्काशी और अर्द्ध कीमती पत्थरों (पिएट्रा ड्यूरा) से अलंकृत है। इसमें मुमताज महल और शाहजहाँ की कब्रें हैं। वे झूठी कब्रें बारीक गढ़ी हुई संगमरमर की जाली से घिरी हुई हैं। कब्रों के नीचे, बगीचे के स्तर पर, असली ताबूत पड़ा हुआ है। केंद्रीय भवन से अलग, चौकोर चबूतरे के चारों कोनों पर सुंदर मीनारें खड़ी हैं।

बगीचे के उत्तर-पश्चिमी और उत्तरपूर्वी किनारों के पास मकबरे के दोनों ओर क्रमशः दो सममित रूप से समान इमारतें हैं - मस्जिद, जो पूर्व की ओर है, और उसका जवाब , जो पश्चिम की ओर है और सौंदर्य संतुलन प्रदान करता है। संगमरमर की गर्दन वाले गुंबदों और वास्तुशिल्प के साथ लाल सीकरी बलुआ पत्थर से निर्मित , वे मकबरे के सफेद संगमरमर के साथ रंग और बनावट दोनों में भिन्न हैं।

यह उद्यान शास्त्रीय मुगल तर्ज पर बनाया गया है - एक वर्ग जो लंबे जलकुंडों (तालाबों) से घिरा है - जिसमें पैदल पथ, फव्वारे और सजावटी पेड़ हैं। परिसर की दीवारों और संरचनाओं से घिरा, यह मकबरे तक एक आकर्षक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिसे बगीचे के केंद्रीय पूल में परिलक्षित देखा जा सकता है।

परिसर का दक्षिणी छोर एक चौड़े लाल बलुआ पत्थर के प्रवेश द्वार से सुशोभित है, जिसमें दो मंजिल ऊंचा केंद्रीय मेहराब है। मेहराब के चारों ओर सफेद संगमरमर का पैनल काले कुरानिक अक्षरों और पुष्प डिजाइनों से जड़ा हुआ है। मुख्य मेहराब दो जोड़ी छोटे मेहराबों से घिरा है। प्रवेश द्वार के उत्तरी और दक्षिणी अग्रभागों पर सफेद छतरियों (छत्तरियों ; गुंबद जैसी संरचनाएं) की मेल खाती पंक्तियाँ हैं, प्रत्येक अग्रभाग पर 11, पतली सजावटी मीनारें हैं जो लगभग 98 फीट (30 मीटर) तक ऊंची हैं। संरचना के चारों कोनों पर अष्टकोणीय मीनारें हैं जो बड़ी छतरियों से ढकी हुई हैं ।

दो उल्लेखनीय सजावटी विशेषताएं पूरे परिसर में दोहराई जाती हैं: पिएट्रा ड्यूरा और अरबी सुलेख । जैसा कि मुगल शिल्प में सन्निहित है,पिएट्रा ड्यूरा (इतालवी: "कठोर पत्थर") अत्यधिक औपचारिक और परस्पर जुड़े ज्यामितीय और पुष्प डिजाइनों में लैपिस लाजुली , जेड , क्रिस्टल , फ़िरोज़ा और नीलमसहित विभिन्न रंगों के अर्ध-कीमती पत्थरों की जड़ाई को शामिल करता है।रंगसफेद मकराना संगमरमर के चमकदार विस्तार को संयमित करने का काम करते हैं। अमानत खान अल-शिराज़ी के निर्देशन में, कुरान की आयतों को इस्लामी कलात्मक परंपरा के केंद्र में, सुलेख में ताज महल के कई हिस्सों में अंकित किया गया था। बलुआ पत्थर के प्रवेश द्वार के शिलालेखों में से एक को डेब्रेक (89:28-30) के रूप में जाना जाता है और यह विश्वासियों को स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए आमंत्रित करता है। सुलेख मकबरे के ऊंचे मेहराबदार प्रवेश द्वारों को भी घेरता है। छत के सुविधाजनक बिंदु से एक समान उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए, अक्षरों का आकार उसकी सापेक्ष ऊंचाई और दर्शक से दूरी के अनुसार बढ़ता है।

ताज महल का केन्द्र बिंदु है, एक वर्गाकार नींव आधार पर बना श्वेत संगमर्मर का मक़बरा। यह एक सममितीय इमारत है, जिसमें एक ईवान यानि अतीव विशाल वक्राकार (मेहराब रूपी) द्वार है। इस इमारत के ऊपर एक वृहत गुम्बद सुशोभित है। अधिकतर मुग़ल मक़बरों जैसे, इसके मूल अवयव फ़ारसी उद्गम से हैं।

मूल - आधार

इसका मूल-आधार एक विशाल बहु-कक्षीय संरचना है। यह प्रधान कक्ष घनाकार है, जिसका प्रत्येक किनारा 55 मीटर है (देखें: तल मानचित्र, दांये)। लम्बे किनारों पर एक भारी-भरकम पिश्ताक, या मेहराबाकार छत वाले कक्ष द्वार हैं। यह ऊपर बने मेहराब वाले छज्जे से सम्मिलित है।

मुख्य मेहराब

मुख्य मेहराब के दोनों ओर,एक के ऊपर दूसरा शैलीमें, दोनों ओर दो-दो अतिरिक्त पिश्ताक़ बने हैं। इसी शैली में, कक्ष के चारों किनारों पर दो-दो पिश्ताक (एक के ऊपर दूसरा) बने हैं। यह रचना इमारत के प्रत्येक ओर पूर्णतया सममितीय है, जो कि इस इमारत को वर्ग के बजाय अष्टकोण बनाती है, परंतु कोने के चारों भुजाएं बाकी चार किनारों से काफी छोटी होने के कारण, इसे वर्गाकार कहना ही उचित होगा। मकबरे के चारों ओर चार मीनारें मूल आधार चौकी के चारों कोनों में, इमारत के दृश्य को एक चौखटे में बांधती प्रतीत होती हैं। मुख्य कक्षा में मुमताज महल एवं शाहजहाँ की नकली कब्रें हैं। ये खूब अलंकृत हैं, एवं इनकी असल निचले तल पर स्थित है।

गुम्बद

मकबरे पर सर्वोच्च शोभायमान संगमर्मर का गुम्बद (देखें बांये), इसका सर्वाधिक शानदार भाग है। इसकी ऊँचाई लगभग इमारत के आधार के बराबर, 35 मीटर है और यह एक 7 मीटर ऊँचे बेलनाकार आधार पर स्थित है। यह अपने आकारानुसार प्रायः प्याज-आकार (अमरूद आकार भी कहा जाता है) का गुम्बद भी कहलाता है। इसका शिखर एक उलटे रखे कमल से अलंकृत है। यह गुम्बद के किनारों को शिखर पर सम्मिलन देता है।

छतरियाँ

गुम्बद के आकार को इसके चार किनारों पर स्थित चार छोटी गुम्बदाकारी छतरियों (देखें दायें) से और बल मिलता है। छतरियों के गुम्बद, मुख्य गुम्बद के आकार की प्रतिलिपियाँ ही हैं, केवल नाप का फर्क है। इनके स्तम्भाकार आधार, छत पर आंतरिक प्रकाश की व्यवस्था हेतु खुले हैं। संगमर्मर के ऊँचे सुसज्जित गुलदस्ते, गुम्बद की ऊँचाई को और बल देते हैं। मुख्य गुम्बद के साथ-साथ ही छतरियों एवं गुलदस्तों पर भी कमलाकार शिखर शोभा देता है। गुम्बद एवं छतरियों के शिखर पर परंपरागत फारसी एवं हिंदू वास्तु कला का प्रसिद्ध घटक एक धात्विक कलश किरीटरूप में शोभायमान है।

किरीट कलश

मुख्य गुम्बद के किरीट पर कलश है (देखें दायें)। यह शिखर कलश आरंभिक 1800ई० तक स्वर्ण का था और अब यह कांसे का बना है। यह किरीट-कलश फारसी एवं हिंन्दू वास्तु कला के घटकों का एकीकृत संयोजन है। यह हिन्दू मन्दिरों के शिखर पर भी पाया जाता है। इस कलश पर चंद्रमा बना है, जिसकी नोक स्वर्ग की ओर इशारा करती हैं। अपने नियोजन के कारण चन्द्रमा एवं कलश की नोक मिलकर एक त्रिशूल का आकार बनाती हैं, जो कि हिन्दू भगवान शिव का चिह्न है।

बाहरी अलंकरण

वृहत पिश्ताक पर सुलेखन

ताजमहल का बाहरी अलंकरण, मुगल वास्तुकला का उत्कृष्टतम उदाहरण हैं। जैसे ही सतह का क्षेत्रफल बदलता है, बडे पिश्ताक का क्षेत्र छोटे से अधिक होता है और उसका अलंकरण भी इसी अनुपात में बदलता है। अलंकरण घटक रोगन या गचकारी से अथवा नक्काशी एवं रत्न जड़ कर निर्मित हैं। इस्लाम के मानवतारोपी आकृति के प्रतिबन्ध का पूर्ण पालन किया है। अलंकरण को केवल सुलेखन, निराकार, ज्यामितीय या पादप रूपांकन से ही किया गया है।

ताजमहल में पाई जाने वाले सुलेखन फ्लोरिड थुलुठ लिपि के हैं। ये फारसी लिपिक अमानत खां द्वारा सृजित हैं। यह सुलेख जैस्पर को श्वेत संगमर्मर के फलकों में जड़ कर किया गया है। संगमर्मर के सेनोटैफ पर किया गया कार्य अतीव नाजुक, कोमल एवं महीन है। ऊँचाई का ध्यान रखा गया है। ऊँचे फलकों पर उसी अनुपात में बडा लेखन किया गया है, जिससे कि नीचे से देखने पर टेढापन ना प्रतीत हो। पूरे क्षेत्र में कुरान की आयतें, अलंकरण हेतु प्रयोग हुई हैं। हाल ही में हुए शोधों से ज्ञात हुआ है, कि अमानत खाँ ने ही उन आयतों का चुनाव भी किया था।

अमूर्त प्रारूप प्रयुक्त किए गए हैं, खासकर आधार, मीनारों, द्वार, मस्जिद, जवाब में; और कुछ-कुछ मकबरे की सतह पर भी। बलुआ-पत्थर की इमारत के गुम्बदों एवं तहखानों में, पत्थर की नक्काशी से उत्कीर्ण चित्रकारी द्वारा विस्तृत ज्यामितीय नमूने बना अमूर्त प्रारूप उकेरे गए हैं। यहां हैरिंगबोन शैली में पत्थर जड़ कर संयुक्त हुए घटकों के बीच का स्थान भरा गया है। लाल बलुआ-पत्थर इमारत में श्वेत, एवं श्वेत संगमर्मर में काले या गहरे, जडाऊ कार्य किए हुए हैं। संगमर्मर इमारत के गारे-चूने से बने भागों को रंगीन या गहरा रंग किया गया है। इसमें अत्यधिक जटिल ज्यामितीय प्रतिरूप बनाए गए हैं। फर्श एवं गलियारे

में विरोधी रंग की टाइलों या गुटकों को टैसेलेशन नमूने में प्रयोग किया गया है। पादप रूपांकन मिलते हैं मकबरे की निचली दीवारों पर। यह श्वेत संगमर्मर के नमूने हैं, जिनमें सजीव बास रिलीफ शैली में पुष्पों एवं बेल-बूटों का सजीव अलंकरण किया गया है। संगमर्मर को खूब चिकना कर और चमका कर महीनतम ब्यौरे को भी निखारा गया है। डैडो साँचे एवं मेहराबों के स्पैन्ड्रल भी पीट्रा ड्यूरा के उच्चस्तरीय रूपांकित हैं। इन्हें लगभग ज्यामितीय बेलों, पुष्पों एवं फलों से सुसज्जित किया गया है। इनमें जडे हुए पत्थर हैं - पीत संगमर्मर, जैस्पर, हरिताश्म, जिन्हें भीत-सतह से मिला कर घिसाई की गई है।

ताजमहल का आंतरिक कक्ष परंपरागत अलंकरण अवयवों से कहीं परे है। यहाँ जडाऊ कार्य पर्चिनकारी नहीं है, वरन बहुमूल्य पत्थरों एवं रत्नों की लैपिडरी कला है। आंतरिक कक्ष एक अष्टकोण है, जिसके प्रत्येक फलक में प्रवेश-द्वार है, हांलाकि केवल दक्षिण बाग की ओर का प्रवेशद्वार ही प्रयोग होता है। आंतरिक दीवारें लगभग 25 मीटर ऊँची हैं, एवं एक आभासी आंतरिक गुम्बद से ढंकी हैं, जो कि सूर्य के चिन्ह से सजा है। आठ पिश्ताक मेहराब फर्श के स्थान को भूषित करते हैं। बाहरी ओर, प्रत्येक निचले पिश्ताक पर एक दूसरा पिश्ताक लगभग दीवार के मध्य तक जाता है। चार केन्द्रीय ऊपरी मेहराब छज्जा बनाते हैं, एवं हरेक छज्जे की बाहरी खिड़की, एक संगमर्मर की जाली से ढंकी है। छज्जों की खिड़कियों के अलावा, छत पर बनीं छतरियों से ढंके खुले छिद्रों से भी प्रकाश आता है। कक्ष की प्रत्येक दीवार डैडो बास रिलीफ, लैपिडरी एवं परिष्कृत सुलेखन फलकों से सुसज्जित है, जो कि इमारत के बाहरी नमूनों को बारीकी से दिखाती है। आठ संगमर्मर के फलकों से बनी जालियों का अष्टकोण, कब्रों को घेरे हुए है। हरेक फलक की जाली पच्चीकारी के महीन कार्य से गठित है। शेष सतह पर बहुमूल पत्थरों एवं रत्नों का अति महीन जडाऊ पच्चीकारी कार्य है, जो कि जोडे. में बेलें, फल एवं फूलों से सज्जित है।

मुस्लिम परंपरा के अनुसार कब्र की विस्तृत सज्जा मना है। इसलिये शाहजहाँ एवं मुमताज महल के पार्थिव शरीर इसके नीचे तुलनात्मक रूप से साधारण, असली कब्रों में, में दफ्न हैं, जिनके मुख दांए एवं मक्का की ओर हैं। मुमताज महल की कब्र आंतरिक कक्ष के मध्य में स्थित है, जिसका आयताकार संगमर्मर आधार 1.5 मीटर चौडा एवं 2.5 मीटर लम्बा है। आधार एवं ऊपर का शृंगारदान रूप, दोनों ही बहुमूल्य पत्थरों एवं रत्नों से जडे. हैं। इस पर किया गया सुलेखन मुमताज की पहचान एवं प्रशंसा में है। इसके ढक्कन पर एक उठा हुआ आयताकार लोज़ैन्ज (र्होम्बस) बना है, जो कि एक लेखन पट्ट का आभास है। शाहजहाँ की कब्र मुमताज की कब्र के दक्षिण ओर है। यह पूरे क्षेत्र में, एकमात्र दृश्य असम्मितीय घटक है। यह असम्मिती शायद इसलिये है, कि शाहजहाँ की कब्र यहाँ बननी निर्धारित नहीं थी। यह मकबरा मुमताज के लिये मात्र बना था। यह कब्र मुमताज की कब्र से बडी है, परंतु वही घटक दर्शाती है: एक वृहततर आधार, जिसपर बना कुछ बडा श्रंगारदान, वही लैपिडरी एवं

सुलेखन, जो कि उनकी पहचान देता है। तहखाने में बनी मुमताज महल की असली कब्र पर अल्लाह के निन्यानवे नाम खुदे हैं जिनमें से कुछ हैं "ओ नीतिवान, ओ भव्य, ओ राजसी, ओ अनुपम, ओ अपूर्व, ओ अनन्त, ओ अनन्त, ओ : तेजस्वी... " आदि। शाहजहां की कब्र पर खुदा है;

ताजमहल का द्वार

ताजमहल इमारत समूह रक्षा दीवारों से परिबद्ध है। यह दीवारें तीन ओर लाल बलुआ पत्थर से बनीं हैं, एवं नदी की ओर खुला है। इन दीवारों के बाहर अतिरिक्त मकबरे स्थित हैं, जिसमें शाहजहाँ की अन्य पत्नियाँ दफ्न हैं, एवं एक बडा मकबरा मुमताज की प्रिय दासी हेतु भी बना है। यह इमारतें भी अधिकतर लाल बलुआ पत्थर से ही निर्मित हैं, एवं उस काल के छोटे मकबरों को दर्शातीं हैं। इन दीवारों की बागों से लगी अंदरूनी ओर में स्तंभ सहित तोरण वाले गलियारे हैं। यह हिंदु मन्दिरों की शैली है, जिसे बाद में, मस्जिदों में भी अपना ली गई थी। दीवार में बीच-बीच में गुम्बद वाली गुमटियाँ भी हैं (छतरियों वाली छोटी इमारतें, जो कि तब पहरा देने के काम आती होंगीं, परंतु अब संग्रहालय बनीं हुईं हैं।

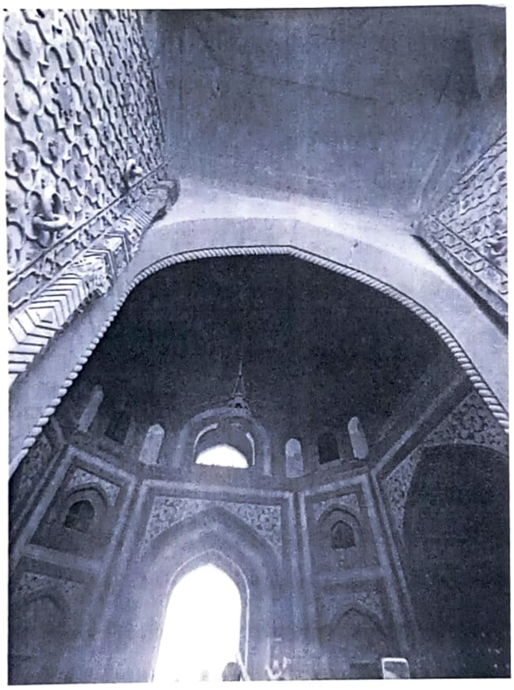

मुख्य द्वार (दरवाज़ा) भी एक स्मारक स्वरूप है। यह भी संगमर्मर एवं लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। यह आरम्भिक मुगल बादशाहों के वास्तुकला का स्मारक है। इसका मेहराब ताजमहल के मेहराब की प्रति है। इसके पिश्ताक मेहराबों पर सुलेखन से अलंकरण किया

गया है। इसमें बास रिलीफ एवं पीट्रा ड्यूरा पच्चीकारी से पुष्पाकृति आदि प्रयुक्त हैं। मेहराबी छत एवं दीवारों पर यहाँ की अन्य इमारतों जैसे ज्यामितीय नमूने बनाए गए हैं।

इस समूह के सुदूर छोर पर दो विशाल लाल बलुआ पत्थर की इमारतें हैं, जो कि मकबरे की ओर सामना किए हुए हैं। इनके पिछवाड़े पूर्वी एवं पश्चिमी दीवारों से जुड़े हैं, एवं दोनों ही एक दूसरे की प्रतिबिम्ब आकृति हैं। पश्चिमी इमारत एक मस्जिद है, एवं पूर्वी को जवाब कहते हैं, जिसका प्राथमिक उद्देश्य वास्तु संतुलन है, एवं आगन्तुक कक्ष की तरह प्रयुक्त होती रही है। इन दोनों इमारतों के बीच अंतर यह है, कि मस्जिद में एक मेहराब कम है, उसमें मक्का की ओर आला बना है, एवं जवाब के फर्श में ज्यामितीय नमूने बने हैं, जबकि मस्जिद के फर्श में 569 नमाज पढ़ने हेतु बिछौने (जा-नमाज) के प्रतिरूप काले संगमर्मर से बने हैं। मस्जिद का मूल रूप

शाहजहाँ द्वारा निर्मित अन्य मस्जिदों के समान ही है, खासकर मस्जिद जहाँनुमा, या दिल्ली की जामा मस्जिद: एक बड़ा दालान या कक्ष या प्रांगण, जिसपर तीन गुम्बद बने हैं। इस काल की मुगल मस्जिदें, पुण्यस्थान को तीन भागों में बांटतीं हैं; बीचों बीच मुख्य स्थान, एवं दोनो ओर छोटे स्थान। ताजमहल में हरेक पुण्यस्थान एक वृहत मेहराबी तहखाने में खुलता है। यह साथी इमारतें 1643 में पुरी हुईं।

ताज महल से बाहर निकल कर हम वही एक होटल में खाना खाने के बाद , हम मथुरा के लिए रवाना हुवे ,मथुरा हम लगभग शाम के समय पहुंच गए थे । मथुरा से और अंदर जाते ही बस को रखना पड़ा और वहा से चलकर आगे जाना पड़ा और हम कृष्ण जन्मभूमि पहुंच गए।

कृष्ण जन्म भूमि(मथुरा)

कृष्ण जन्म भूमि जिसे कृष्ण जन्मस्थान मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, मल्लापुरा, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत में हिंदू मंदिरों का एक समूह है। ये मंदिर उस स्थान पर स्थित है जहां जगत के पालनहारकृष्ण का जन्म माना जाता है। जन्मभूमि के निकट ही औरंगजेब द्वारा निर्मित इमारत(मज्जित)भी स्थित है।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व से इस स्थान का धार्मिक महत्व रहा है। मंदिरों को पूरे इतिहास में कई बार नष्ट किया गया, सबसे हाल ही में 1670 में गोकुल जाट की मृत्यु के बाद मुगल आक्रमणकारी औरंगजेब द्वारा किया गया है। उन्होंने वहां ईदगाह मस्जिद का निर्माण किया जो आज भी कायम (जल्द ही हटा दी जाएगी)है। 20वीं शताब्दी में, केशवदेव मंदिर, जन्म स्थान पर गर्भ गृह मंदिर और भागवत भवन, उद्योगपतियों की आर्थिक मदद से नए मंदिर परिसर का निर्माण किया गया था।

प्राचीन और शास्त्रीय काल

हिंदू परंपराओं के अनुसार,श्री कृष्ण का जन्म देवकी और वासुदेव के घर एक जेल की कोठरी में हुआ था, क्यूंकी उनके मामा कंस को आकाशवाणी द्वारा मालूम चला की देवकी के आठवे संतान से उसकी मृत्यु इसलिए उसने दोनों को कालकोटरी मे बंद कर दिया था। परंपरा के अनुसार,श्री कृष्ण को समर्पित एक मंदिर का निर्माण उनके परपोते वज्रनाभ ने किया था। वर्तमान स्थल जिसे कृष्ण जन्मस्थान के रूप में जाना जाता है को कटरा (शाब्दिक अर्थ 'बाजार स्थान') केशवदेव के नाम से जाना जाता था । पुरातात्विक उत्खनन से छठी शताब्दी ईसा पूर्व से मिट्टी के बर्तनों और टेराकोटा का पता चला था। इसने कुछ जैन मूर्तियों के साथ-साथ एक बड़े बौद्ध परिसर का निर्माण किया, जिसमें यश विहार, एक मठ, गुप्त काल शामिल है। वैष्णव मंदिर इस स्थान पर पहली शताब्दी के आरंभ में स्थापित किया गया हो सकता है।

मध्ययुगीन काल

1017 या 1018 में, गजनी के महमूद ने महाबन पर हमला किया और लूट लिया । गजनी के मुंशी, हालांकि अभियान में उनके साथ नहीं थे, अल उत्बी ने अपने तारिख-ए-यामिनी मे महाबन के पड़ोसी शहर में वर्णन किया है जिसे मथुरा के रूप में पहचाना जाता है। उन्होंने लिखा, "शहर के केंद्र में एक विशाल और भव्य मंदिर था, जिसके बारे में लोगों का मानना था कि यह इंसानों द्वारा नहीं बल्कि स्वर्गदूतों द्वारा बनाया गया था ... मंदिर का कोई भी विवरण, शब्दों में या चित्रों में, गिर जाएगा। संक्षिप्त और अपनी सुंदरता को व्यक्त करने में विफल।" गजनी के महमूद ने लिखा है, "यदि कोई इसके बराबर भवन बनाना चाहे, तो वह सौ मिलियन दीनार खर्च किए बिना ऐसा नहीं कर पाएगा, और काम में दो सौ साल लग जाएंगे, भले ही सबसे सक्षम और अनुभवी कामगार हों कार्यरत थे।" उसने सभी मंदिरों को जलाने और उन्हें ध्वस्त करने का आदेश दिया। उसने सोने-चाँदी की मूर्तियों को लूटा और सौ ऊँटों का भार उठा ले गया।स्थल से मिले संस्कृत के एक शिलालेख में उल्लेख किया गया है विक्रम संवत 1207 (1150) कुंतल वंश के राजा जाजन (जज्ज)

जो कुंतल वंश के दिल्लीपति क्षत्रिय सम्राट अनंगपाल के पौत्र थे यहां एक विष्णु मंदिर का निर्माण सफेद पत्थर से करवाया।

मुगल काल

16वीं शताब्दी की शुरुआत में वैष्णव संत चैतन्य महाप्रभु और वल्लभाचार्य ने मथुरा का दौरा किया।अब्दुल्ला, मुगल सम्राट जहांगीर के शासनकाल में, तारीख-ए-दौदी में 16वीं शताब्दी में दिल्ली के सुल्तान सिकंदर लोदी द्वारा मथुरा और उसके मंदिरों के विनाश का उल्लेख करते हैं । लोदी ने हिंदुओं को नदी में स्नान करने और किनारे पर सिर मुंडवाने पर भी रोक लगा दी थी।1650 में एक फ्रांसीसी यात्री टैवर्नियर ने मथुरा का दौरा किया और लाल बलुआ पत्थर में बने अष्टकोणीय मंदिर का वर्णन किया था। मुगल दरबार में काम करने वाले इतालवी यात्री निकोलाव मनुची ने भी मंदिर का वर्णन किया है। मुगल राजकुमार दारा शिकोह ने मंदिर को संरक्षण दिया था और मंदिर को एक रेलिंग दान में दी थी।मुगल बादशाह औरंगजेब के आदेश पर मथुरा के गवर्नर अब्दुन नबी खान ने रेलिंग को हटा दिया और उन्होंने हिंदू मंदिरों के खंडहरों पर जामा मस्जिद का निर्माण कराया। मथुरा में जाट विद्रोह के दौरान 1669 में अब्दुल नबी खान की हत्या गोकुल जाट और उदयभान ने युद्ध में कर दी थी। औरंगजेब ने मथुरा पर हमला किया और 1670 में उस केशवदेव मंदिर को नष्ट कर दिया और उसके स्थान पर शाही ईदगाह का निर्माण किया।

आधुनिक काल

1804 में मथुरा ब्रिटिश नियंत्रण में आ गया। ईस्ट इंडिया कंपनी ने कटरा की भूमि की नीलामी की और इसे बनारस के एक धनी बैंकर राजा पत्निमल ने खरीद लिया ।राजा पत्निमल मंदिर बनाना चाहते थे लेकिन ऐसा नहीं कर सके। उनके वंशजों को कटरा की भूमि विरासत में मिली। उनके वंशज राय कृष्ण दास को मथुरा के मुसलमानों द्वारा 13.37 एकड़ भूमि के स्वामित्व के लिए चुनौती दी गई थी जिस पर दरगाह और शाही ईदगाह स्थित है, लेकिन इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने राज कृष्ण दास के पक्ष में फैसला सुनाया। 1935 में कैलाश नाथ काटजू और मदनमोहन चतुर्वेदी ने इन मुकदमों में मदद की थी। राजनेता और शिक्षाविद् मदन मोहन मालवीय ने 7 फरवरी 1944 को राज कृष्ण दास से रुपये की लागत से भूमि का अधिग्रहण किया। 13000 रुपये उद्योगपति जुगल किशोर बिड़ला की आर्थिक मदद से मिले। मालवीय की मृत्यु के बाद, जुगल किशोर बिड़ला ने श्री कृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट नामक एक ट्रस्ट का गठन किया, जिसे बाद में 21 फरवरी 1951 को श्री कृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान के रूप में पंजीकृत किया गया और भूमि का अधिग्रहण किया। जुगल किशोर बिड़ला ने नए मंदिर के निर्माण का जिम्मा एक अन्य उद्योगपति और परोपकारी जयदयाल डालमिया को सौंपा। मंदिर परिसर का निर्माण अक्टूबर 1953 में भूमि को समतल करने के साथ शुरू किया गया था और फरवरी 1982 में पूरा हुआ। उनके सबसे बड़े पुत्र विष्णु हरि डालमिया ने उनकी जगह ली और उनकी मृत्यु तक ट्रस्ट में सेवा की। उनके पोते अनुराग

डालमिया ट्रस्ट के ज्वाइंट मैनेजिंग ट्रस्टी हैं। निर्माण को रामनाथ गोयनका सहित अन्य व्यापारिक परिवारों द्वारा वित्त पोषित किया गया था।

1968 में, श्री कृष्ण जन्मस्थान सेवा संघ और शाही ईदगाह समिति ने एक समझौता समझौता किया, जिसने ट्रस्ट को मंदिर की भूमि और शाही ईदगाह के प्रबंधन को ईदगाह समिति को प्रदान किया और साथ ही श्री कृष्ण जन्मस्थान सेवा संघ का कोई कानूनी दावा नहीं किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता गणेश वासुदेव मावलंकर श्री कृष्ण जन्मस्थान सेवा संघ के पहले अध्यक्ष थे, जिन्होंने समझौते पर हस्ताक्षर किए और समझौते पर हस्ताक्षर करने के उनके कानूनी अधिकार का विरोध किया गया। उनके बाद एमए अय्यंगार थे , उसके बाद अखंडानंद सरस्वती और रामदेव महाराज थे। महंत नृत्यगोपाल दास वर्तमान अध्यक्ष हैं। 1992 में बाबरी मस्जिद का विध्वंस के बाद वृंदावन के निवासी मनोहर लाल शर्मा ने मथुरा जिला न्यायालय में 1968 के समझौते को चुनौती देने के साथ-साथ 1991 पूजा स्थल अधिनियम को रद्द करने के लिए एक याचिका दायर की।

मथुरा के श्रीकृष्ण जन्म स्थान पर भी आक्रमणकारी महमूद गजनवी ने हमला किया था। लूटकर इस धर्मस्थल को भी तोड़ डाला था। यह मंदिर तीन बार तोड़ा और चार बार बनाया जा चुका है। अभी भी इस जगह पर मालिकाना हक के लिए दो पक्षों में कोर्ट में विवाद चल रहा है।

- जिस जगह पर आज कृष्ण जन्मस्थान है, वह पांच हजार साल पहले मल्लपुरा क्षेत्र के कटरा केशव देव में राजा कंस का कारागार हुआ करता था। इसी कारागार में रोहिणी नक्षत्र में आधी रात को भगवान कृष्ण ने जन्म लिया था।
- इतिहासकार डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने कटरा केशवदेव को ही कृष्ण जन्मभूमि माना है। विभिन्न अध्ययनों और साक्ष्यों के आधार पर मथुरा के राजनीतिक संग्रहालय के दूसरे कृष्णदत्त वाजपेयी ने भी स्वीकारा कि कटरा केशवदेव ही कृष्ण की असली जन्मभूमि है।
- इतिहासकारों के अनुसार, सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा बनवाए गए इस भव्य मंदिर पर महमूद गजनवी ने सन 1017 ई. में आक्रमण कर इसे लूटने के बाद तोड़ दिया था।

कृष्ण के प्रपौत्र बज्रनाभ ने बनवाया था पहला मंदिर:-

- जनमान्यता के अनुसार कारागार के पास सबसे पहले भगवान कृष्ण के प्रपौत्र वज्रनाभ ने अपने कुलदेवता की स्मृति में एक मंदिर बनवाया था।
- आम लोगों का मानना है यहां से मिले शिलालेखों पर ब्राह्मी-लिपि में लिखा हुआ है। इससे यह पता चलता है कि यहां शोडास के राज्य काल में वसु नामक व्यक्ति ने श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर एक मंदिर, उसके तोरण-द्वार और वेदिका का निर्माण कराया था।

विक्रमादित्य ने बनवाया था दूसरा बड़ा मंदिर:

- इतिहासकारों का मानना है कि सम्राट विक्रमादित्य के शासन काल में दूसरा मंदिर 400 ईसवी में बनवाया गया था। यह भव्य मंदिर था।
- उस समय मथुरा संस्कृति और कला के बड़े केंद्र के रूप में स्थापित हुआ था। इस दौरान यहां हिन्दू धर्म के साथ-साथ बौद्ध और जैन धर्म का भी विकास हुआ था। आस-पास बौद्ध आस्था का भी केंद्र बना.
- इस दौरान मथुरा के आसपास बौद्धों और जैनियों के भी विहार और मंदिर भी बने।
- इन निर्माणों के प्राप्त अवशेषों से यह पता चलता है कि भगवान श्रीकृष्ण का जन्मस्थान उस समय बौद्धों और जैनियों के लिए भी आस्था का केंद्र रहा था।

विजयपाल देव के शासनकाल में बना तीसरा बड़ा मंदिर, सिकंदर लोदी ने तुड़वाया:-

- खुदाई में मिले संस्कृत के एक शिलालेख से पता चलता है कि 1150 ईस्वी में राजा विजयपाल देव के शासनकाल के दौरान जज्ज नाम के एक व्यक्ति ने श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर एक नया मंदिर बनवाया था।
- उसने विशाल और भव्य मंदिर का निर्माण करवाया था। इस मंदिर को 16वीं शताब्दी के शुरुआत में सिकंदर लोदी के शासन काल में नष्ट कर डाला गया था।

जहांगीर के शासनकाल में चौथी बार बना मंदिर, औरंगजेब ने तुड़वाया:-

- इसके लगभग 125 वर्षों बाद जहांगीर के शासनकाल के दौरान ओरछा के राजा वीर सिंह देव बुंदेला ने इसी स्थान पर चौथी बार मंदिर बनवाया।
- कहा जाता है कि इस मंदिर की भव्यता से चिढ़कर औरंगजेब ने सन 1669 में इसे तुड़वा दिया और इसके एक भाग पर ईदगाह का निर्माण करा दिया।
- यहां प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि इस मंदिर के चारों ओर एक ऊंची दीवार का परकोटा मौजूद था। मंदिर के दक्षिण पश्चिम कोने में एक कुआं भी बनवाया गया था।
- इस कुएं से पानी 60 फीट की ऊंचाई तक ले जाकर मंदिर के प्रांगण में बने फव्वारे को चलाया जाता था। इस स्थान पर उस कुएं और बुर्ज के अवशेष अभी तक मौजूद है।

बिड़ला ने की श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट की स्थापना:-

- ब्रिटिश शासनकाल में वर्ष 1815 में नीलामी के दौरान बनारस के राजा पटनीमल ने इस जगह को खरीद लिया।
- वर्ष 1940 में जब यहां पंडित मदन मोहन मालवीय आए, तो श्रीकृष्ण जन्मस्थान की दुर्दशा देखकर वे काफी निराश हुए।
- इसके तीन वर्ष बाद 1943 में उद्योगपति जुगलकिशोर बिड़ला मथुरा आए और वे भी श्रीकृष्ण जन्मभूमि की दुर्दशा देखकर बड़े दुखी हुए। इसी दौरान मालवीय जी ने बिड़ला को श्रीकृष्ण जन्मभूमि के पुनर्रुद्धार को लेकर एक पत्र लिखा।
- बिड़ला ने भी उन्हें जवाब में इस स्थान को लेकर हुए दर्द को लिख भेजा। मालवीय की इच्छा का सम्मान करते हुए बिड़ला ने सात फरवरी 1944 को कटरा केशव देव को राजा पटनीमल के तत्कालीन उत्तराधिकारियों से खरीद लिया।
- इससे पहले कि वे कुछ कर पाते मालवीय का देहांत हो गया। उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार, बिड़ला ने 21 फरवरी 1951 को श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट की स्थापना की।

1982 में पूरा हुआ वर्तमान मंदिर का निर्माण कार्य

- ट्रस्ट की स्थापना से पहले ही यहा रहने वाले कुछ मुसलमानों ने 1945 में इलाहाबाद हाईकोर्ट में एक रिट दाखिल कर दी। इसका फैसला 1953 में आया।
- इसके बाद ही यहां कुछ निर्माण कार्य शुरू हो सका। यहां गर्भ गृह और भव्य भागवत भवन के पुनरुद्धार और निर्माण कार्य आरंभ हुआ, जो फरवरी 1982 में पूरा हुआ।

वहां से हमने कुछ खरीद दारी भी की। वह सब देख कर निकलने के लिए हमने बहुत समय लग गया था, लगभग हम वहां से १० बजे के बाद ही नई दिल्ली के लिए रवाना हो गए थे। और सब बहुत थक हुवे थे, थोड़ा आगे चलकर हम एक होटल में रुक गए कुछ खाने के लिए वहा पर सबने खाना खा कर, हम निकल गए नई दिल्ली के लिए हमने बीच में कही पर भी हमने स्टॉप नहीं ली । और कब सब थकान के वजह से बस में ही सो गए हम पता नही चला रात के ३/ ३:३० बजे के आस पास हम होटल पहुंच गए थे । हम इतने थके हुवे थे की हमे अगले दिन कही जाने का मान नही हो रहा था । फिर भी उसी समय हमे सिर ने अगले दिन का दिनचर्या क्या होगा और किस समय हमे निकलना है यह भी बताया गया । और हमारे भ्रमण का वह आखिर दिन था, हमे बचे हुवे कुछ जगहों को देखना भी था ।

४ बजे सोकर ७ बजे उठ कर हम सब ८ बजे तयार होकर रिसेप्शन पर आ गए थे, सब थके थे फिर भी आखिरी दिन दिल्ली में सबको अच्छी तरह से बिताना भी था । हम सुबह का नाश्ता कर भ्रमण का आखिरी दिन दिल्ली में बिताने के लिए हम निकल गये थे।

नन्द जी का मंदिर

नन्द जी का मंदिर नन्दगाँव में स्थित है। नन्दगाँव ब्रजमंडल का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है।

गोवर्धन से 16 मील पश्चिम उत्तर कोण में, कोसी से 8 मील दक्षिण में तथा वृन्दावन से 28 मील पश्चिम में नन्दगाँव स्थित है।

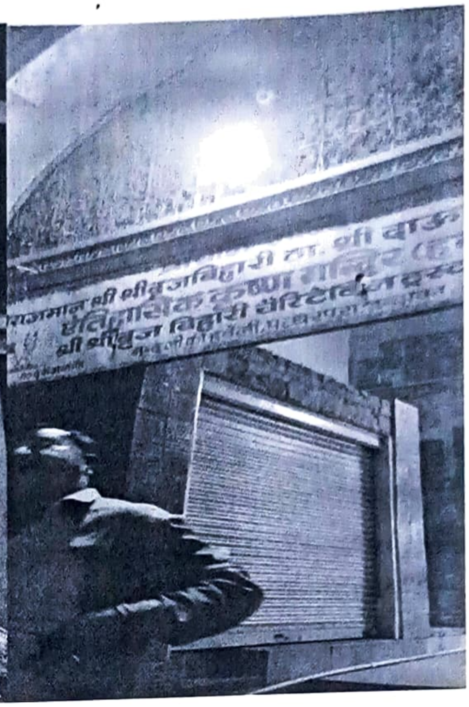

नन्दगाँव की प्रदक्षिणा[१] चार मील की है। यहाँ पर कृष्णलीलाओं से सम्बन्धित 56 कुण्ड हैं, जिनके दर्शन में 3-4 दिन लग जाते हैं।

मथुरा से नन्दगाँव 30 किलोमीटर दूर है। यहीं एक पहाड़ी पर नन्दबाबा का मन्दिर है।

नन्द जी मंदिर के नीचे 'पामरी कुण्ड' नामक सरोवर है।

यात्रियों के ठहरने के लिए यहाँ धर्मशालाएँ हैं।

उग्रसेन की बावली

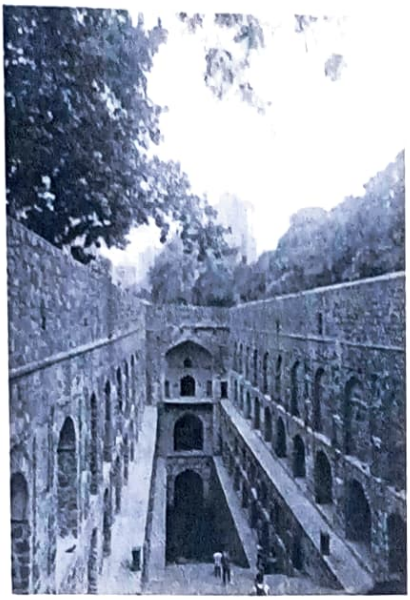

अत्यधिक व्यस्त जनजीवन, सांय-सांय कर चलती गाड़ियां, कीट-फतिंगों की तरह लोगों की भीड़, जहरीली हवा व धूलम-धूल पर्यावरण के साथ दिन-रात की आपाधापी और भागदौड़ वाली दिल्ली के बीचो-बीच तमाम रहस्यों को समेटे हुए वर्षों से शांत और शीतल वातावरण में खड़ी है 'अग्रसेन की बावली'। दिल्ली की सबसे खूबसूरत जगह यानी कनॉट प्लेस के हैली रोड में स्थित यह बावली मूलत: 60 मीटर लंबा और 15 मीटर ऊंचा एक कुआं है जिसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित रखा गया है।

माना जाता है कि महाभारत काल में ही इसका निर्माण करवाया गया था, लेकिन बाद में अग्रवाल समाज के महाराजा अग्रसेन ने इसका जीर्णोद्धार कराया, जिसके बाद इसे 'अग्रसेन की बावली' के नाम से जाना जाने लगा। हालांकि अब तक इससे संबंधित कोई ऐसी ऐतिहासिक जानकारी नहीं मिली है जिससे इस समृद्ध स्माकर के निर्माता की आधिकारिक पुष्टी हो सके।

देश की सबसे भयावह जगहों की सूची में इसका नाम भी शामिल है। ऊपर-ऊपर से तो यह बावली लाल बलुए पत्थरों से बनी दीवारों के कारण बेहद सुंदर लगती है, लेकिन आप जैसे - जैसे इसकी सीढ़ियों से नीचे उतरते जाते हैं, एक अजीब सी गहरी चुप्पी फैलने लगती और आकाश गायब होने लगता है।

इस बावली के तमाम ऐसे अनसुलझे रहस्य हैं, जो आज तक राज ही हैं। हालांकि अब तो लोग यहां के शांत वातावरण में किताबें पढ़ने के लिए भी आते हैं। कई लोग इसकी खूबसूरती के कारण भी यहां खींचे चले आते हैं।

इस बावली के नीचे तक पहुंचने के लिए करीब 103-105 सीढ़ियां उतरनी पड़ती हैं।

पुराने जमाने में पानी को बचाने के लिए इस तरह की बावली को बनाया जाता था।

एक समय में दिल्ली और पुरानी दिल्ली के लोग यहां तैराकी सीखने के लिए आते थे।

एक समय बावली का कुआं काले रंग के पानी से भरा हुआ था।

यह काला पानी यहां आने वाले लोगों को सम्मोहित कर आत्महत्या के लिए उकसाता था।

इस बावड़ी में 'पीके', 'झूम बराबर झूम' समेत कई बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है।

यह दिल्ली की उन गिनी-चुनी बावलियों में से एक है, जो अभी भी अच्छी स्थिति में है।

इसके स्थापत्य में 'व्हेल मछली की पीठ के समान' छत है।

भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार के नक्शे के अनुसार 1868 में इस स्मारक का निर्माण ब्रिटिश सरकार द्वारा किया गया था - इस स्मारक को 'औजर सैन की बोवली' के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। वहीं बावली के बाहर लगे शिलापट पर इसका नाम 'उग्रसैन की बावली' लिखा हुआ है।

बावली के पश्चिमी कोने में एक छोटी सी मस्जिद भी बनी है। इस मस्जिद के स्तंभों में कुछ ऐसे विशेष लक्षण और रंग रूप उभरे हुए हैं, जो बौद्ध काल की कुछ असाधारण संरचनाओं से मेल खाते हैं।

बावली के शून्य शांत वातावरण में पत्थर की ऊंची-ऊंची दीवारों के बीच जब कबूतरों की गुटरगूँ और चमकादड़ों की चीखें और फड़फड़ाहट गूंजती है, तो बावली का माहौल पूरे शरीर में सिहरन पैदा कर देता है। कई बार तो यहां आने वालों ने किसी अदृश्य साया को भी महसूस किया है।

कुछ वर्षों पहले तक यह बावली बहुत चर्चित तो नहीं थी, लेकिन आमिर खान की फिल्म 'पीके' की शूटिंग के बाद प्रेमी जोड़ों और टूरिस्टों के बीच यह खूब पसंद की जाने वाली जगह बन गई। अब यहां आने-जाने वालों की अच्छी-खासी संख्या है।

राजघाट

भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित है। राज घाट को किसी विशेष प्रस्तावना की ज़रूरत नहीं है। यह महात्मा गाँधी का समाधि स्थल है जिसे 31 जनवरी 1948 को उनकी हत्या के उपरान्त बनाया गया था। इस स्थान के महत्व का पता इस बात से चलता है कि भारत आये किसी भी प्रवासी प्रतिनिधि मण्डल को राजघाट आकर पुष्पाँजलि समर्पित करना और महत्मा गाँधी को सम्मान देना अनिवार्य रहता है। राज घाट यमुना नदी के किनारे महात्मा गाँधी मार्ग पर स्थित है।

राजघाट की वास्तु कला

स्मारक को वानु जी भुटा द्वारा डिज़ाइन किया गया है और स्थापत्य कला को दिवंगत नेता के अनुकरण में 'सरल' रखा गया है। हालाँकि निर्माण के उपरान्त स्मारक में कई बदलाव किये जा चुके हैं।

विशेषता

यह दिल्ली का सबसे लोकप्रिय आकर्षण है और प्रतिदिन हजारों पर्यटकों को अपनी ओर खींचता है। यह स्मारक काले संगमरमर की बनी एक वर्गाकार संरचना है जिसके एक किनारे पर तांबे के कलश में लगातार एक मशाल जलती रहती है। इसके चारों ओर कंकड़युक्त फुटपाथ और हरे-भरे लॉन हैं और स्मारक पर 'हे राम' गुदा हुआ है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि महात्मा के ये अन्तिम शब्द थे। मृत्यु से पहले गांधीजी के अंतिम शब्द 'हे! राम' थे, जो उनकी समाधि पर अंकित हैं।

अन्य समाधियाँ

गाँधी जी के समाधि स्थल के पास भारत पर शासन करने वाले कई अन्य महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञों के स्मारक स्थित हैं। इनमें जवाहरलाल नेहरू का शाँतिवन, लाल बहादुर शास्त्री का विजयघाट, इन्दिरा गाँधी का शक्ति स्थल, ज्ञानी जैल सिंह का एकता स्थल और राजीव गाँधी की वीर भूमि शामिल हैं।

अन्तिम संस्कार

गांधीजी दिल्ली में 30 जनवरी 1948 को प्रार्थना सभा के लिए जा रहे थे, तब नाथूराम गोडसे ने उनकी हत्या कर दी थी। यह वही पवित्र स्थान है, जहां गांधी जी का अंतिम संस्कार किया गया था।

विदेशी विशेष व्यक्ति

समाधि के पास कई पेड़ लगे हुए हैं, जिन पर उन विदेशियों के नाम लिखे हुए हैं, जो राजघाट देखने आए। जैसे कि ब्रिटिश महारानी एलिजाबेथ द्वितीय, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन, पूर्व आस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री राफ टिडरमैन के नाम यहां देख सकते हो।

गांधी स्मारक संग्रहालय

राजघाट में गांधी स्मारक संग्रहालय भी है, जिसमें गांधी जी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएं और उनके सर्वोदय आंदोलन को फिल्म द्वारा दिखाया गया है। यह फिल्म प्रत्येक रविवार को 3 बजे हिंदी में और 5 बजे अंग्रेज़ी में दिखाई जाती है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

हर शुक्रवार को यहां स्मारक समारोह होते हैं और हर साल 2 अक्तूबर (जन्म दिवस) और 30 जनवरी (निधन) पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।

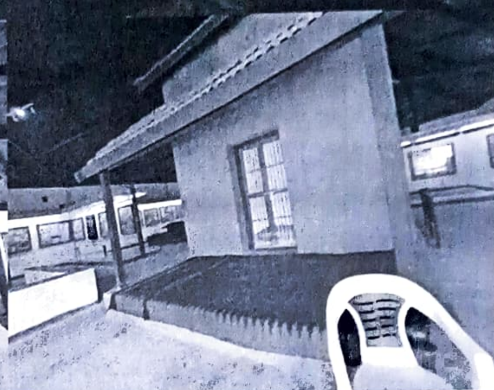
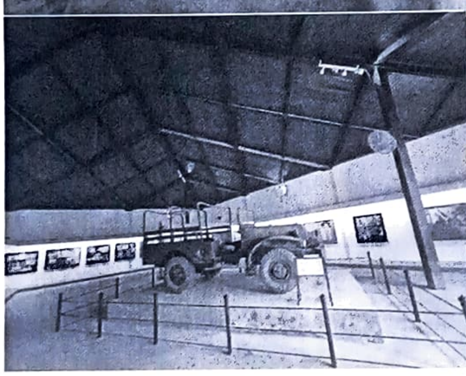
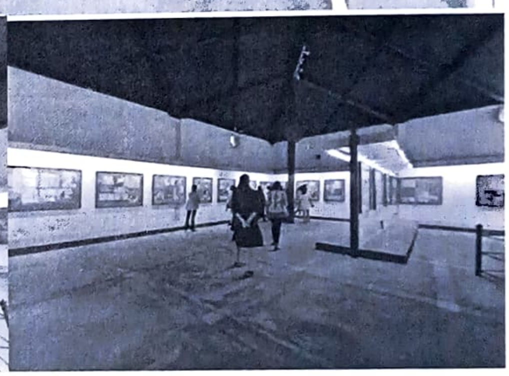

प्रवेश शुल्क

समाधि के लिए प्रवेश निःशुल्क है। राजघाट का समय सुबह 5 बजे से शुरू हो जाता है और शाम 7.30 बजे यह बंद होता है।

जहां पर दुनिया का सबसे बड़ा फोटो एक्सबिशन होने के नाते प्रसिद्ध है, यहां पर 272 फोटो के द्वारा गांधी जी के पूरे जीवन को दर्शाया गया है। इसके अलावा, महात्मा गांधी के ऐतिहासिक वस्तु जैसे उनसे जुड़े नाव टेबल जीप आदि अभी भी हैं।

इस म्यूजियम में गांधीजी के जीवन उनके द्वारा दिए गए उपदेशों को 272 फोटो एक्सबिशन के द्वारा दर्शाया गया है, दुनिया का सबसे बड़ा फोटो एग्जिबिशन है। यहां पर आपको गांधी जी से जुड़े कई यादें मिल जाएगी। गांधी जी जिस नाव से साबरमती नदी पार किए थे, वह नाव आज भी यहां मौजूद है। इसके अलावा, जिस जीप से गांधी जी का पार्थिव शरीर राजघाट लाया गया था वह जीप भी आज यहां मौजूद है।

बच्चों के लिए क्विजगांधी दर्शन के प्रोग्राम ऑफिसर वेदव्यास ने आगे बताया कि गांधी दर्शन में कॉलेज स्टूडेंट के लिए हमेशा यहां पर सेमिनार होता है। इसके अलावा, स्कूली बच्चों के लिए क्विज कंपटीशन रखा जाता है। यहां पर हर महीने कोई ना कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होता है. गांधी जी के जीवन के बारे में उनकी विचारधारा जानने वाले के लिए यह जगह सबसे परफेक्ट है। यहां आकर गांधी जी के बारे में जान सकेंगे।

गांधी दर्शन म्यूजियम में कोई भी एंट्री फीस नहीं है। गांधी दर्शन दिल्ली के राजघाट के पास स्थित है।

गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति का मूल उद्देश्य विभिन्न सामाजिक-शैक्षणिक कार्यक्रमों के माध्यम से महात्मा गाँधी के जीवन ध्येय एवं विचारों का प्रचार-प्रसार करना है।

स्मारक में संग्रहित पहलू

महात्मा गाँधी की याद और उनके पावन आदर्शों को प्रदर्शित करने वाले दृश्यात्मक पहलू।

गाँधीजी को एक महात्मा बनाने वाले जीवन-मूल्यों की ओर गहनता से ध्यानाकर्षण कराने वाले शैक्षणिक पहलू।

कुछ अनुभूत आवश्यकताओं को दिग्दर्शित करने वाली गतिविधियों को प्रस्तुत करने के लिए सेवाकार्य का पहलू।

संग्रहालय में महात्मा गाँधी द्वारा यहाँ बिताए गए वर्षों के संबंध में फोटोग्राफ, मूर्तियाँ, चित्र, भितिचित्र, शिलालेख तथा स्मृति चिह्न संग्रहित है। गाँधीजी की कुछ निजी वस्तुएँ भी यहाँ सावधानीपूर्वक संरक्षित हैं। नई सहस्राब्दि की परिरेखाओं को ध्यान में रखते हुए अधुनातन

प्रौद्योगिकी के द्वारा महात्मा गाँधी के जीवन और संदेष को जीवन्त रूप से प्रस्तुत करने वाली मल्टीमीडिया प्रदर्शनी प्रमुख आकर्षण हैं। भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 'गाँधी स्मृति और दर्शन समिति' को राष्ट्र को समर्पित किया था। निर्धन तथा असहाय लोगों के लिए गाँधीजी की सार्वभौमिक चिंता को प्रदर्शित करने वाली पृथ्वी की गोलाकृति से उभरती हुई मानवाकार से बड़ी महात्मा गाँधी की मूर्ति, जिसके बगल में हाथों में कबूतर पकडे हुए एक बालक और एक बालिका है, मुख्य द्वार पर आगन्तुकों का स्वागत करती है। यह विख्यात मूर्तिकार श्रीराम सुतार की कृति हैं। प्रस्तर मूर्ति के आधार मात्र में अंकित है मेरा जीवन ही मेरा संदेष है। जिस स्थल पर राष्ट्रपिता को गोलियों का शिकार बनाया गया था, वहाँ एक बलिदान स्तंभ स्थित है, जो भारत के लम्बे 'स्वाधीनता संग्राम' के दौरान अनुभूत सभी पीड़ाओं और बलिदानों के प्रतीक के रूप में महात्मा गाँधी के आत्म बलिदान की यादगार है।

यह राजघाट पर महात्मा गाँधी की समाधि के निकट स्थित है। छत्तीस एकड़ में फैला यह परिसर 1969 में महात्मा गाँधी की शताब्दी के अवसर पर अस्तित्व में आया था। इस अवसर की यादगार के रूप में एक 'अंतरराष्ट्रीय गाँधी दर्शन प्रदर्शनी' भी स्थापित की गई थी। परिसर में फैले हुए छह विशाल मण्डपों में विभाजित यह प्रदर्शनी महात्मा गाँधी के शाश्वत संदेश "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है"' को जीवन्त करती हैं। इसके संस्थापको ने कल्पना की थी कि कालान्तर में यहाँ अंतरराष्ट्रीय स्तर का एक शैक्षणिक केन्द्र विकसित होगा। वर्तमान में इस केन्द्र में महात्मा गाँधी के विषय में एक विस्तृत प्रदर्शनी, सम्मेलन कक्ष, प्रमुख राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बैठकों के लिए आवासीय सुविधाएँ, एक पुस्तकालय, बाल-कोनाए फोटो एकक और प्रकाशन प्रभाग अवस्थित है। समिति एक त्रैमासिक समाचार पत्रिका 'गाँधी दर्पण', 'अनाशक्ति दर्शन एक पत्रिका' तथा 'दि यमुना' शीर्षक का बच्चों के एक समाचार पत्र का प्रकाशन करती है।

उद्देश्य

'गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति' का मुख्य उद्देश्य विविध प्रकार की सामाजिक-शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गातिविधियों के द्वारा महात्मा गाँधी के जीवन, ध्येय और विचारों का प्रचार करना है। इस बात पर भी जोर दिया जाता है कि समाज के विभिन्न वर्गों के बीच उन मूल्यों की प्रतिस्थापना की जाए, जो राष्ट्रपिता को प्रिय थीं। इसके अतिरिक्त समिति अपनी विविध गतिविधियों के माध्यम से समुदाय के लिए रचनात्मक कार्य की ओर लोगों को, ख़ास कर युवाओं को आकर्षित करती है। इक्कीसवीं शताब्दी को ध्यान में रखते हुए गाँधी स्मृति ने अनेक कार्यक्रम तैयार किए हैं, जों बच्चों, युवाओं और महिलाओं सहित समाज के विभिन्न

वर्गों के लिए अभिप्रेत हैं। प्रयास यह भी है कि नवीनतम प्रक्रियाओं के माध्यम से महात्मा गाँधी द्वारा परिकल्पित समग्र विकास के लक्ष्य के प्रति युवाओं को तैयार किया जाए।

गतिविधियाँ

अपने तीन दशक से अधिक के अस्तित्व में, इक्कीसवीं सदी की कल्पना के साथ कदम मिलाते हुए समिति लोगों के लिए अनेक गतिविधियों तथा कार्यक्रमों की योजना बनाती रहती है, जिनमें बच्चों, युवाओं और महिलाओं पर विशेष बल दिया जाता है। उनमें से प्रमुख हैं- गाँधी को विद्यालयों तक ले जाना, युवा शिविर, पंचायती राज में प्रशिक्षण, वार्ता और सम्मेलन, महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम, सांप्रदायिक सदभाव के लिए प्रयास, गाँधीजी के भजनों और गीतों का गायन, नियमित चरखा कताई कक्षाएँ, गाँधी स्वाधीनता संग्राम और राष्ट्रीय नेताओं पर फिल्में दिखलाना, संस्मरणात्मक कार्यक्रम, गाँधी स्मृति व्याख्यान, शैक्षणिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों के साथ शैक्षिक कार्यक्रम।

हाल के वर्षों में समिति के कार्यों को प्रकृति का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय आयाम मिला है। कार्यक्रम अधिक समस्या आधारित हो गये हैं और महत्वपूर्ण सामयिक समस्याओं की प्रेरणा ले रहे हैं। समिति का विस्तार भारत के विभिन्न भागों, ख़ासकर पूर्वोत्तर, चम्पारण, पश्चिम बंगाल, जम्मू और कश्मीर में हुआ है। प्रयास यह है कि नवीनतम प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हुए गाँधीजी द्वारा कल्पित समग्र विकास के लक्ष्य की ओर आज के युवाओं को प्रेरित किया जाए। नए उद्यमों की विशेषताओं में प्रमुख हैं- विद्यालयों तथा महाविद्यालयों एवं बाहरी युवाओं, स्वयंसेवकों तथा प्रशिक्षणार्थियों को समिति के साथ जोड़ा जाए। वे अब समिति के अभिन्न अंग हैं। 'राष्ट्रीय इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय', नई दिल्ली के सहयोग से गाँधीवादी विचारों पर प्रमाण पत्र तथा डिग्री पाठ्यक्रम आरम्भ किए गए हैं और सृजन के तहत कुछ व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को 'राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय' द्वारा मान्यता प्राप्त हो गई है।

राष्ट्रीय बाल भवन

राष्ट्रीय बाल भवन, मानव संसाधन और विकास मंत्रालय द्वारा पूर्ण रूप से वित पोषित एक स्वायतशासी संस्था है, जो स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग के तहत कार्य करती है। 1956 में इसके गठन से ही बाल भवन ने देशभर में उत्तरोत्तर प्रगति की है। वर्तमान में राष्ट्रीय बाल भवन से सम्बद्ध 68 राज्य बाल भवन तथा 10 बाल केन्द्र हैं। सम्बद्ध बाल भवनों और बाल केन्द्रों के माध्यम से बाल भवन की स्कूल छोड़ने वाले बच्चे, सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के बच्चे, गलियों के बच्चे तथा विशेष बच्चों तक पहुँच है। दिल्ली के कई स्कूलों ने राष्ट्रीय बाल भवन की सदस्यता ली है तथा औपचारिक और अनौपचारिक संस्थानों के इस साझा प्रयासों से ही बच्चों की रचनान्तमक अभिवृद्धि में बड़ी सफलता प्राप्त हुई है।

समग्र विकास

राष्ट्रीय बाल भवन बच्चों को उनके लिंग, जाति, धर्म, रंग आदि भेदभाव के बिना तनावमुक्त वातावरण में विभिन्न गतिविधियों में शामिल कर उनके समग्र विकास के लिए कार्यरत है। इनमें कुछ प्रमुख गतिविधियाँ हैं- क्ले माडलिंग, पेपर मैची, संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, हस्त शिल्पकला, संग्रहालय गतिविधि, फ़ोटोग्राफी, वीडियोग्राफी, इंडोर-आउटडोर खेल, गृह प्रबंधन, पारम्परिक कला, शैक्षिक और इन्नोवैटिव खेल/चेस, विज्ञान रोचक हैं इत्यादि। राष्ट्रीय बाल भवन के कुछ विशेष आकर्षण हैं- मिनी ट्रेन, मिनी ज़ू, फ़िश कार्नर, साइंस पार्क, फ़नी मिरर, कल्चर क्राफ़्ट विलेज। राष्ट्रीय बाल भवन में राष्ट्रीय प्रशिक्षण संसाधन केन्द्र (एनटीआरसी) है, जो विभिन्न गतिविधियों को प्रशिक्षित करता है। इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य और ध्यान बच्चों के सर्वांगीण विकास और व्यक्तित्व विकास में अध्यापकों को प्रशिक्षित करना है, क्योंकि अध्यापक समुदाय बच्चों की सामाजिक आर्थिक, भावुक, बौद्धिक

और मनोवैज्ञानिक जरूरतों को समझने में कुशल होते है। एनटीआरसी का उद्देश्य अध्यापकों और छात्रों दोनों के लिए अध्यापन और सीखने को एक सुखद अनुभव बनाना भी है।

योजना

राष्ट्रीय बाल भवन ने उन रचनाशील बच्चों को उनके सामाजिक आर्थिक स्तर में भेद किए बिना पहचान, सम्मान और देखभाल के लिए एक योजना भी शुरू की है। 'द बालश्री स्कीम' योजना के पीछे मकसद यही है कि रचनात्मकता मानवीय संभावना है, जिसका सीधा सम्बन्ध स्व-अभिव्यक्ति और स्व-विकास से होता है। इस योजना के तहत चार रचनात्मक क्षेत्रों अर्थात् सृजनात्मक कला, सृजनात्मक प्रदर्शन, सृजनात्मक वैज्ञानिक खोज, सृजनात्मक लेखन में 9 से 16 वर्ष के आयु वर्ग की रचनात्मकता वाले बच्चों की पहचान करना है। यह योजना 1995 से चालू है और तब से बच्चों को उनके रचनात्मकता क्षेत्रों में उत्कृष्टता के लिए पहचान कर उन्हें सम्मानित किया जा चुका है। ये सम्मान उनको या तो राष्ट्रपति या उनकी पत्नी से राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक रंगारंग कार्यक्रम में दिये गए हैं।

जामा मस्जिद

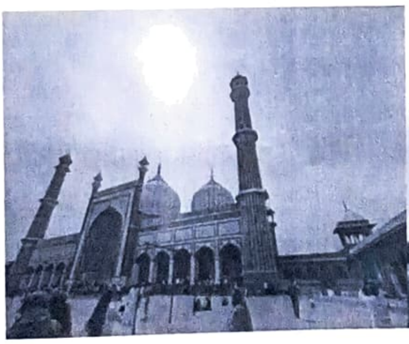

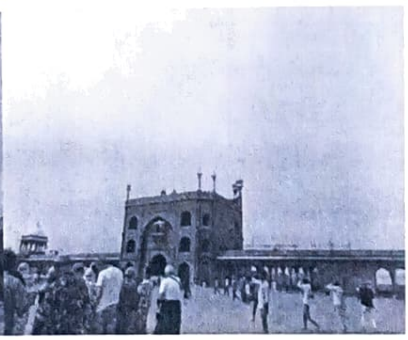

पुरानी दिल्ली की यह भव्य मस्जिद भारत की सबसे बड़ी मस्जिद है इसके प्रांगण में 25,000 श्रद्धालु तक समाहित हो सकते हैं। इसका निर्माण 1644 में शुरू हुआ था और मुगल सम्राट शाहजहां जिन्होंने ताजमहल और लालकिला बनाया था उनकी अंतिम बेहद खर्चीली वास्तुकला की बानगी थी।

इस अलंकृत मस्जिद के तीन गेट चार मीनारें और 40 मीटर की लम्बी छोटी मीनारें है जो लाल बालुई पत्थर और सफेद संगमरमर से निर्मित है ।

आगन्तुक उत्तरी गेट से लबादे (रोब्स) किराए पर ले सकते है। यहां आप स्थानीय पोशाक पहनकर यहीं के निवासियों की भांति लगेंगे।

जामा मस्जिद (Jama Masjid) दिल्ली में स्थित है। यह दिल्ली के पुराने शहर (Old Delhi) के इलाके में वजिराबाद रोड (Wazirabad Road) पर है। यह भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है और दिल्ली के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक मानी जाती है। इस मस्जिद का निर्माण मुगल शासक शाहजहां द्वारा 1650 ई. में किया गया था और इसका निर्माण संगमरमर और लाल पत्थर से किया गया था। इसका विशाल गुम्बद (गोंबद) और सुंदर शैली के लिए यह विख्यात है। मस्जिद में एक मशहूर मीनार भी है, जिससे आप दिल्ली का अद्भुत नजारा देख सकते हैं। यहां रोजाना मुसलमानों के लाखों श्रद्धालु नमाज पढ़ने आते हैं और इसे दिल्ली का धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यटन स्थल माना जाता है। इसका नाम विश्वविख्यात शाहजहां के नाम पर रखा गया था, जो इसे बनवाने वाले थे।

जामा मस्जिद कितने समय में बना था:-

जामा मस्जिद के निर्माण में कुल मिलाकर 6 साल का समय लगा था। इसका निर्माण मुगल शासक शाहजहां द्वारा 1650 ई. में शुरू हुआ था और 1656 ई. में पूरा हुआ। इसके निर्माण में लगभग 5,000 मजदूरों ने काम किया था और इसे बनाने के लिए 1 मिलियन खर्च हुए

था। जामा मस्जिद भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है और उत्तर भारत के मुगल शासकों द्वारा बनाए गए प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक मानी जाती है।

जामा मस्जिद की खासियत

जामा मस्जिद भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है और इसे भारतीय संस्कृति और ऐतिहासिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है। आइए जानते है इसकी खासियत के बारे में।

गुंबद और मीनार: जामा मस्जिद के निर्माण में उच्च गुम्बद (गोंबद) और चार मीनार हैं, जो मस्जिद की शानदार दृश्यशोभा को बढ़ाते हैं। गुम्बद की ऊंचाई लगभग 40 मीटर है और यह दिल्ली के सर्वोच्च बिंदु में से ऊंची है। मीनारों से आप दिल्ली का अद्भुत नजारा देख सकते हैं।

विशालता और सुंदरता: जामा मस्जिद भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है और इसकी विशालता और सुंदरता इसे विशेष बनाती है. इसे संगमरमर और लाल पत्थर से निर्मित किया गया है और इसकी मशहूर भवनशैली भी इसे अलग बनाती है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व: जामा मस्जिद दिल्ली के पुराने शहर में स्थित है और भारतीय संस्कृति और इतिहास का महत्वपूर्ण प्रतीक है। इसका निर्माण मुग़ल शासक शाहजहां द्वारा किया गया था और इसके विशाल गुम्बद और मीनारों से इसका ऐतिहासिक महत्व भी बढ़ाता है।

धार्मिक स्थल: जामा मस्जिद में प्रतिदिन मुसलमान समुदाय के लाखों श्रद्धालु नमाज़ पढ़ने आते हैं। यह दिल्ली का धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र है और मस्जिद के नजदीक एक बाज़ार (Chawri Bazar) है, जो दिल्ली के बाजारों में भारतीय एवं अन्य वस्तुओं का विक्रय करने के लिए जाना जाता है।

जामा मस्जिद का असली नामआपको बताते चलें जामा मस्जिद का असली "मस्जिद-ए-जहान्नुमा" (Masjid-e-Jahan Numa) है। यह अरबी भाषा में "दुनिया की सबसे बड़ी

"मस्जिद" का मतलब होता है। यह नाम मस्जिद के विशाल आकार और भव्यता को ध्यान में रखकर रखा गया है। हालांकि इसे सामान्यतः "जामा मस्जिद" के नाम से जाना जाता है।

जामा मस्जिद का समय

दिल्ली की जामा मस्जिद का समय सामान्यतः सुबह से लेकर शाम तक होता है। मस्जिद में प्रतिदिन पाँच बार नमाज पढ़ी जाती है जिसके लिए विशेष समय निर्धारित किया गया है

पहली नमाज - सुबह (Fajr) सूर्योदय से थोड़े समय पहले होती है।

दूसरी नमाज - जुहर (Dhuhr) सूर्योदय के बाद आधी दिन के बाद होती है।

तीसरी नमाज - अस्र (Asr) धूप के कुछ समय बाद होती है।

चौथी नमाज - मगरिब (Maghrib) सूर्यास्त के तुरंत बाद होती है।

पाँचवीं नमाज - ईशा (Isha) सूर्यास्त के कुछ समय बाद होती है और रात को होती है

लाल किला

लाल किला इतिहास से भरा हुआ प्रसिद्ध स्मारक है। जो भारतीय राजवंशों की शानदार वास्तुकला का प्रतीक है। यह भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित है और पुरानी दिल्ली के शाहजहां के शासनकाल में बनाया गया था। लाल किले का निर्माण 17वीं शताब्दी में मुगल शासक शाहजहां ने करवाया था। इस किले का नाम इसके रेड स्टोन से बने हुए विशाल प्रांगण की वजह से पड़ा है जिससे यह एक लाल रंग की जाती है। इसे उर्दू भाषा में 'लाल' कहा जाता है, जिसका मतलब 'लाल रंग का' होता है. लाल किले के दीवारों की चौड़ाई लगभग 2.4 किलोमीटर है और इसकी ऊंचाई 18 मीटर से 33 मीटर तक है। इसमें 2.5 किलोमीटर लंबा

और 18 मीटर चौड़ा इलाका है जिसे "चोटीदार" कहते है। आइए जानते है लाल किला का इतिहास क्या है, लाल किला कितने साल पुराना है, लाल किला देखने के लिए दिल्ली कैसे पहुंचे, लाल किला का टिकट क्या है, लाल किला की खासियत।

लाल किला का इतिहास

लाल किला की निर्माण की शुरुआत शाहजहां नामक मुगल सम्राट ने 17वीं सदी में की थी। इसे बनाने का मुख्य उद्देश्य दिल्ली को राष्ट्रीय राजधानी बनाना था। इसके निर्माण में प्रयुक्त संरचना मुगल शैली को प्रतिष्ठित करती है। लाल किला का निर्माण 12 मई 1639 को पूर्ण हुआ और शाहजहां ने इसे अपने बेटे दारा शिकोह को उत्तराधिकारी के रूप में सौंपा गया था। लाल क़िला का आकार बड़ा और विशाल है। इसमें बहुत सारे भवन, मस्जिदें, बाग, महल, और दरबार हैं। इसकी मुख्य दीवारें लाल रंग की हैं, जिससे इसे 'लाल क़िला' के नाम से पुकारा जाता है। इसमें छह प्रमुख दरवाज़े हैं - दिल्ली दरवाज़ा, लाहौर दरवाज़ा, अख़बर दरवाज़ा, बख़्शि दरवाज़ा, नोबेल दरवाज़ा, और हुमायूं दरवाज़ा। यह क़िला भारतीय इतिहास में कई महत्वपूर्ण घटनाओं के साक्षी रहा है। 15 अगस्त 1947 को भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के दिन, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने यहां से पहले आज़ादी के ज़िक्र किया था। यह एक प्रमुख पर्यटन स्थल है जो देश और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है। बता दें लाल क़िला की उम्र 2023 में लगभग 384 साल है। यह मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा 12 मई 1639 को बनवाया गया था।

लाल किला वास्तुकला (आर्किटेक्चर)

दिल्ली का लाल किला मुगल वास्तुकला की प्रतिभा को दर्शाता है, जो विभिन्न स्थानीय निर्माण की परंपराओं जैसे फारसी और हिंदू वास्तुकला के साथ मिश्रित है। लाल किला ने इसके बाद बने दिल्ली, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के प्रमुख स्मारकों की वास्तुकला को प्रभावित किया है।

75 फीट ऊंची लाल बलुआ पत्थर (रेड सैंडस्टोन) की दीवारों से घिरे लाल किला के ग्राउंड में महल, शाही रानियों के निजी कक्ष, मनोरंजन हॉल, शाही भोजन एरिया, प्रोजेक्टिंग बालकनियाँ, स्नानागार, इनडोर नहरें (नाहर-ए-बिहिष्ट या स्वर्ग की धारा), बाग और एक मस्जिद भी है। परिसर के भीतर सबसे प्रमुख संरचनाओं में दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास शामिल हैं, जो मुगल युग की अधिकतर इमारतों में पाई जाने वाली एक विशेषता है।

इमारत के दो मुख्य प्रवेश दवार है - लाहौरी गेट और दिल्ली गेट। लाहौरी गेट किले का मुख्य प्रवेश दवार है, जबकि दिल्ली गेट इमारत के दक्षिणी छोर पर सार्वजनिक प्रवेश दवार है।

एक विश्व धरोहर स्थल

लाल किला को 2007 में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। इसे प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल और अवशेष अधिनियम, 1959, के तहत राष्ट्रीय महत्व का स्मारक भी घोषित किया गया है और इसका प्रबंधन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण दवारा किया जाता है।

लाल किला में अब संग्रहालय हैं जो विभिन्न प्रकार की ऐतिहासिक कलाकृतियों को प्रदर्शित करते हैं। इनमें सुभाष चंद्र बोस संग्रहालय, 1857 का संग्रहालय, याद-ए-जलियां, दृश्यकला और आजादी के दीवाने शामिल हैं।

दिल्ली का लाल किला के बारे में मुख्य तथ्य

स्वतंत्रता दिवस पर झंडा फहराना: भारत के प्रधानमंत्री हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले पर राष्ट्रीय झंडा फहराते हैं। 15 अगस्त 1947 को भारत को अंग्रेजों से आजादी मिलने के बाद से यह परंपरा चल रही है।

असली नाम: इमारत का असली नाम किला-ए-मुबारक था। अंग्रेजों ने इसकी विशाल लाल बलुआ पत्थर की दीवारों के कारण इसका नाम रेड फोर्ट रख दिया, जबकि स्थानीय लोगों ने उसका अनुवाद लाल किला किया।

असली रंग: चूंकि दिल्ली में लाल बलुआ पत्थर की पर्याप्त आपूर्ति नहीं थी, इसलिए लाल किला मूल रूप से चूना पत्थर से बना था। समय के साथ, बाद में इसे अंग्रेजों दवारा लाल रंग से रंगा गया था।

अंतिम मुगल का मुकदमा स्थल: अंग्रेजों ने अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर पर राजद्रोह के आरोप में लाल किला में मुकदमा चलाया, जिसके बाद उन्हें रंगून (अब म्यांमार) भेज दिया गया।

लाल किला लाइट एंड साउंड शो. लाल किला 60 मिनट के लाइट एंड साउंड शो की मेजबानी करता है, जो आगंतुकों को स्मारक के इतिहास के बारे में बताता है। आप शो ऑनलाइन बुक कर सकते हैं या किले के बूथों से टिकट खरीद सकते हैं। हालांकि सीजन के अनुसार समय अलग-अलग हो सकता है, यह शो हिंदी में शाम 7:30 से 8:30 बजे के बीच और अंग्रेजी में रात 9:00 बजे से 10:00 बजे के बीच होता है।

सैनिक प्रशिक्षण के लिए इस्तेमाल

देश की आजादी के बाद भी इस किले का महत्व कम नहीं हुआ, इसका उपयोग भारतीय सैनिकों को प्रशिक्षण देने में किया जाने लगा।, साथ ही यह एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में मशहूर हुआ, वहीं इसके आर्कषण और भव्यता की वजह से इसे 2007 में विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया गया था और आज इसकी खूबसूरती को देखने दुनिया के कोने-कोने से लोग दिल्ली आते हैं।

लाल किले की संरचना (Red Fort Structure)

लाल किले का निर्माण लाल बलुआ पत्थर एवं सफेद संगमरमर के पत्थरों से किया गया है। इस किले के निर्माण के समय इसे कई बहुमूल्यरत्नों व सोने-चांदी से सजाया गया था, लेकिन जब मुगलों का शासन खत्म हुआ और अंग्रेजों ने लाल किले पर कब्जा जमाई तो उन्होंने इस किले से सभी बहुमूल्य रत्न और धातु निकाल ले गए। करीब डेढ़ किलोमीटर की परिधि में फैले भारत के इस भव्य ऐतिहासिक स्मारक के चारों तरफ करीब 30 मीटर ऊंची पत्थर की दीवार बनी हुई है, जिसमें मुगलकालीन वास्तुकला का इस्तेमाल कर बेहद सुंदर नक्काशी की गई है।

इन सभी जगहों पर जाने के बाद हमने अपने भ्रमण का आखिरी स्थान सरोजिनी नगर शॉपिंग करने का सोचा और हम शॉपिंग के लिए चले गए, वहां जाकर १ घंटे के शॉपिंग के बाद हम होटल पहुंचे।

हमे अगले दिन सुबह 5 बजे का ट्रेन था, दिल्ली निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से हम आने वाले थे, हमने आज रात में ही पैकिंग भी करना था, अगले दिन सुबह ३ बजे उठकर रेलवे स्टेशन के लिए निकलना था ।

हम होटल पहुंच कर अपने अपने कमरे में जाकर पैकिंग करने लगे थे, हमारा पैकिंग कर होते ही हम सोने जा ही रहे थे की हमारी कक्षा की ज्योति, सहिश्री और प्रियंका आ गये। उनके साथ थोड़ी मस्ती करते, बातें करते हुए, हमारे कमरे में कुछ फल थे जैसे सेब, नारंगी खाते हुए और हमने नींबू सोडा भी बनाकर हमने मजे किए थे।

और हमने कार्ड गेम भी खेल कर समय देखा तो पहले से ही १२ बज कर गये थे । फिर वह लोग अपने अपने कमरे में जाने लगे और हम भी सो गए।

अगले दिन सुबह उठते समय हम बहुत देर हो गयी थी, हम ३:३० बजे उठकर तयार होकर रिसेप्शन में पहुंचे तो देखा कि हम से पहले ही सब गाड़ी में बैठे हुवे थे और हमारा इंतजार कर रहे थे, सिर थोड़ा हमपर गुस्सा भी हुवे फिर हम गाड़ी में बैठे और रेलवे स्टेशन के लिए निकल गए।

हम रेलवे स्टेशन ४:३० बजे पहुंचे, हमारा सबका सामान बहुत होने के वजह से सिर ने सोचा की कुली से सामान ट्रेन तक पहुंचाया जाए पर उनका रेट हमे जुदा लगा फिर बहुत रेट कम करने के लिए कहा उनसे पर वह मानने के लिए तयार नहीं हुवे, फिर हमने सोचा अपना अपना सामान खुद उठाकर चलते है वरना हमने ट्रेन निकल जाएगी।

फिर हम सब अपने अपने सामान को उठाकर ट्रेन तक ऐसे तेसे पहुच गए । सब ट्रेन के अंदर बैठ गए फिर हमे एक आवाज आती है, मेरा बैग मिसिंग है । वह कौन है देखने मे हमारी एक दोस्त कृतिका है, उसने अपने एक बैग को ऊपर ही छोड़ कर आ गई थी। वह फिर से बैग देखने के लिए गई थी पर उससे मिला नही हमने लगा किसी और ने गड़बड़ में ले गया होगा, फिर भी ट्रेन के निकल ने में अभी समय था, तो हमारी और दोस्तों ने सोचा और एक बार देख कर आ जाएगे, वहा पर वह व्यक्ति उसी बैग को हाथ में लिए सभी से पुछ रहा था की यह बैग किसका है, फिर उन्होंने वह बैग लेकर ट्रेन में आई और कृतिका को दे दिया।

इसी मे ट्रेन का भी निकल ने का भी समय हो गया था, सिर ने और एक बार सब ट्रेन मैं छोड़ गये है, अपनी अपनी

जगह पर बैठे है या नही देख लेते है। और हम २५ मार्च २०२४ को नई दिल्ली निजामुद्दीन से गोवा के लिए रवाना हुए, और उसी दिन होली भी था, हर जगह पर होली का ही माहौल था, फिर हम भी ट्रेन में ही होली भी खेल लेते है ।

अगले दिन हम सुबह के ११ -११:३० बजे मडगांव जंक्शन पहुंच गए और वही सबके परिवार से लोग उन्हें लेने आए हुवे थे, और मेरे घर से मेरे पापा आए हुवे थे, ऐसे ही हमारे भ्रमण समाप्त हो गया था।

मैने कही पढ़ा है "जो सबक हमे किताबों से नहीं मिल पाता वो एक सफर हमे सिखा देता है"।

शायद से हमने इस एक भ्रमण से बहुत कुछ सीखा है, कैसे अपने सामानों का ध्यान रखना चाहिए, कैसे कही जाने से पहले उसकी जानकारी पहले से हमारे पास कुछ होना जरूरी है, वरना हम वहां जाकर हमे बहुत कटिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बिना तयारी के कही नही जाना चाहिए यह भी हमने इस भ्रमण से सीखा है।

निष्कर्ष

शैक्षिक यात्राएँ हम को एक अलग वातावरण में एक-दूसरे के साथ समय बिताने का अवसर प्रदान करती हैं। हम अपने अनुभवों पर चर्चा करते हैं जो हमें और अधिक जुड़ने में मदद करते हैं। एक शैक्षिक दौरा हम को विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण में ले जाता है जहाँ हम नए लोगों से मिलते हैं और क्षेत्रीय प्रथाओं को देखते हैं। ये बातचीत हमें विविधता को स्वीकार करना सिखाती है। इस प्रकार, हमे संचार कौशल, टीम वर्क की भावना को बढ़ाना और हमारे बीच एक समुदाय का निर्माण करता है। इससे हमे निष्पक्ष राय विकसित करने और अजनबियों से सीखने का मौका मिलता है। इस तरह के भ्रमण से ऐसे हमको विकसित करने में सहायता मिलती है जो बुद्धिमान होने के साथ-साथ अपने आस-पास के लोगों की मदद करने के लिए अपनी सीख को लागू करने में चौकस भी होते हैं। इस डिजिटल युग में, संदर्भ में सीखने से हमको बेहतर सामाजिक संकेत विकसित करने में मदद मिलती है जो पाठ्यपुस्तकों और स्क्रीन से परे एक कौशल है।

हम इस भ्रमण के दौरान बहुत कुछ सीखा है। कैसे अपने आस पास के चीजों पर निगरानी रखना, और कही जाने से पहले उसकी पूरी जानकारी प्राप्त कर लेना चाहिए।

हमने दिल्ली को पहले किताबों में और ऑनलाइन वेबसाइट में ही देखा है, पर जब हमने सामने से उससे देखने का मौका मिला और अधिक जानकारी प्राप्त करने का एक सुनहरा अवसर प्रदान हुआ।